KPT
KUMAWAT
PRAGATI TRUST

2xt njh
ekLd t:jh

मासिक

कुमावत इंडिया

कुमावत प्रगति ट्रस्ट की सामाजिक पत्रिका

Email : kumawatindiapatrika@gmail.com

website : www.kumawatindiapatrika.com

o"k&5 | अंक-10 eb&2022 पृष्ठ-32 मूल्य : ₹ 20.00

हार्दिक बधाई

मोहित निमिवाल संग मेघा कुमावत 23 अप्रेल 2022 को विवाह बंधन में बंधे

शुभेच्छु

वर पक्ष :

दादा-दादी : स्व. श्री गिरधारीलाल जी व श्रीमती सूरज देवी

माता-पिता : श्रीमती मंजू व श्री गिरिश निमिवाल

पुत्री-दामाद : श्रीमती रेणुका व श्री अभिनंदन तोंदवाल

वधू पक्ष :

माता-पिता : श्रीमती राजरानी व श्री सेडूराम राणोलिया

भैया-भाभी : श्रीमती अनूका व श्री धीरज राणोलिया

गिरिश कुमावत प्लाट नं. 223, रामनगर विस्तार, सोढ़ाला, जयपुर

कुमावत प्रगति ट्रस्ट

पता : एफ-31-ए, एस.एल. मार्ग, लालबहादुर नगर प., दुर्गापुरा, जयपुर-302018

मुख्य संरक्षक	:	सुरेन्द्र कुमार वर्मा (नागा)	**मो. 9414994006**
अध्यक्ष	:	रमेश कुमावत (गेदर)	**मो. 9414554322**
उपाध्यक्ष	:	रामप्रकाश कुमावत एडवोकेट	**मो. 9887440666**
सचिव	:	श्रीमती भारती तोंदवाल	**मो. 9414810584**
कोषाध्यक्ष	:	लक्ष्मी नारायण घोड़ीवाल	**मो. 9549656438**
सदस्य ट्रस्टी	:	सी.एम. कुमावत (बड़ीवाल)	**मो. 9829056063**
		हेमचन्द खड़गटा	**मो. 9351682036**
		मनोज सिरस्वा	**मो. 9414043127**
		रामप्रकाश कुमावत (मारवाल)	**मो. 9414074376**
		जयकिशन सोकिल	**मो. 9829125428**
		चेतन बालोदिया	**मो. 9414052736**
सलाहकार	:	गिरधारी लाल सिंघनवाल	**मो. 9414263429**

सम्पादक मण्डल : रामप्रकाश कुमावत (मारवाल) सम्पादक - 9414074376, जयसिंह गुड़ीवाल सह-सम्पादक 9461343432, गौरव अजमेरा 9829488824, प्रमोद कुण्डलवाल 9414362169, मनीष कुमावत 9660702083 **पदेन सदस्य :** अध्यक्ष, सचिव एवं प्रकाशक।

व्यवस्थापक मण्डल : महेश चन्द जलान्धरा 9828118789, लालचन्द धुंधारिया 9413335998, सुरेन्द्र मारोठिया 9314820385, राजेश धुंधारिया 9314506330, राजेश कुमावत (मरोडिया) 9829097496, श्रीमती राजबाला बिर्थला 7976475370, प्रभुदयाल तुनगरिया किशनगढ़ 9680931428, अशोक कुमावत - 9352070394 एवं श्रीमती शशि कला बालोदिया।

उप-कोषाध्यक्ष : खेमचंद खड़गटा 9829140629

पत्रिका सहयोगी :

छत्तीसगढ़ : रमेश कुमार तुनवाल **मो. 9425234397 दिल्ली :** राधेश्याम घासोलिया **मो. 9818711580 सूरत :** शुभकरण किरोड़ीवाल **मो. 9898097444 वापी :** कृष्णगोपाल **मो. 9824892299 मुम्बई :** विजय किरोड़ीवाल, **मो. 9867177188 जींद (हरियाणा) :** बलवीर सिंह वर्मा **मो. 9355322301 कोटा :** चन्द्र प्रकाश कांकर **मो. 9214983402 सीकर :** रामगोपाल भोड़ीवाल **मो. 9610784657 उदयपुर :** घनश्याम पटवा **मो. 9460913044,** दयाशंकर रावड़िया **मो. 9414391034 ब्यावर :** नरेन्द्र आर्य **मो. 8107944493 किशनगढ़ :** नन्दकिशोर पारमवाल **मो. 9667090499 बगरू :** चेनसुख बड़ीवाल **मो. 9929012957 सांगानेर :** सोहनलाल अजमेरा **मो. 9636860812 इंदौर :** नेमीचंद कारवाल **मो. 9993998645** **प्रोसेसिंग व मुद्रक :** राज ब्लॉक्स, चौड़ा रास्ता, जयपुर

सदस्यता शुल्क रु. : विशिष्ठ संरक्षक- 5000, संरक्षक-3000, 10 वर्षीय-1300 एवं 5 वर्षीय-600

विज्ञापन दरें : अंतिम कवर पृष्ठ-3500, कवर पृष्ठ अन्दर, 3000, अन्दर 1 पृष्ठ-2500, 1/2 पृष्ठ-1300, 1/4 पृष्ठ-700

नोट 1 : संरक्षक सदस्य को आजीवन (25 वर्ष) तक पत्रिका प्रेषित व 1 बार मय फोटो परिचय प्रकाशन, विशिष्ठ संरक्षक का आजीवन पत्रिका व प्रत्येक अंक में 10 वर्ष तक नाम का प्रकाशन।

नोट 2. 12 विज्ञापन निरन्तर देने पर 2 विज्ञापन नि:शुल्क प्रकाशित किये जायेंगे। 6 विज्ञापन निरन्तर देने पर 1 विज्ञापन नि:शुल्क प्रकाशित किया जायेगा।

बैंक खाता : कुमावत प्रगति ट्रस्ट, संख्या 13850110020562 यूको बैंक, गांधी सर्किल, जयपुर, IFS Code : UCBA0001385

यदि राशि सीधे बैंक खाते में स्लिप/ऑनलाइन जमा कराई गई है तो कृपया व्हाट्सएप नं. 9549656438 पर सूचित अवश्य करें।

स्वत्वाधिकार : कुमावत प्रगति ट्रस्ट के लिए प्रकाशक, मुद्रक सी.एम. कुमावत द्वारा राज ब्लॉक्स, बी-81, करतारपुरा इण्डस्ट्रीयल एरिया, 22 गोदाम, जयपुर से मुद्रित एवं एफ-31-ए, एस.एल. मार्ग, लालबहादुर नगर प., दुर्गापुरा, जयपुर-302018 से प्रकाशित सम्पादक राम प्रकाश कुमावत (मारवाल)

सम्पादकीय

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है सदियों से वह अपने जीवन काल में विवाह करके अपने परिवार का लालन-पालन करता आ रहा है। विवाह जिसे शादी भी कहा जाता है, दो लोगों के बीच एक सामाजिक या धार्मिक मान्यता प्राप्त मिलन है जो उन लोगों के बीच उनके व परिवारजनों और समाज के बीच अधिकारों और दायित्व को स्थापित करता है। विवाह के समारोह को विवाह उत्सव (वेडिंग) कहते हैं। शास्त्रों के अनुसार विवाह आठ प्रकार के होते हैं। ब्रह्म, दैव, आर्श, प्रजापत्य, असुर, गंधर्व, राक्षस और पिशाच उक्त आठ विवाह में से ब्रह्म विवाह को ही मान्यता दी गई है। हिंदू विवाह भोग लिप्सा का साधन नहीं, एक धार्मिक संस्कार है। वर्तमान में विवाह आयोजन को दिखावा, वैभव प्रदर्शन, अत्यधिक खर्चीला बनाकर इस अंत: शुद्धि संस्कार का आधुनिकरण कर दिया गया है। लगता है इस पवित्र बंधन के वैदिक कार्यक्रम को संपन्न करने हेतु किया गया अत्यधिक दिखावा और खर्चीलेपन को हमारे समाज ने मान्यता दे दी है। हमें सादगी, सरलता से बिना आडंबर में किए गए विवाहों की प्रशंसा कर उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए।

महंगाई व बेरोजगारी के इस युग में सामान्य व्यक्ति को अपने लाड़ले व लाड़लियों की शादी करने का सपना, पहाड़ जैसा व्यतीत हो रहा है। फलस्वरूप हमारे समाज के नवयुवक व नवयुवतियों की वैवाहिक औसत आयु, द्रोपदी के चीर की तरह बढ़ रही है। आज परिजनों व समाज के समक्ष जवान बच्चों की शादी करने की समस्याएं विकराल रूप लेती जा रही है। प्रथम प्राथमिकता के रूप में मानकर हमें योजनाएं बनाने की जिम्मेदारी लेनी चाहिए। सेमिनार आयोजित कर हमारे नवयुवक, युवतियों को रोजगार व रोजगार प्राप्ति हेतु प्रतियोगिताएं के साथ साथ समय पर विवाह करने की आवश्यकता पर जोर देना चाहिए साथ ही समय पर विवाह नहीं होने के कारण भविष्य में आने वाली समस्याओं पर प्रकाश डालना चाहिए ताकि इस ओर उनका ध्यान जाए। साथ ही बाल विवाह नहीं हो इसके लिए जागरूकता लानी चाहिए।

ऐसे परिजन जो शादी के खर्च करने में सक्षम नहीं है, उनके साथ-साथ समृद्ध व धनी लोगों को भी अपने पुत्र पुत्रियों को सामुहिक सम्मेलन में विवाह करवाना चाहिए। सम्मेलन में अपने बच्चों की शादी करने वाले धनी व समृद्ध लोगों को सम्मानित करना चाहिए। हमारे समाज की विभिन्न समितियां समय समय पर हर वर्ष सामूहिक विवाह सम्मेलन आयोजित कर, पुण्य का काम कर रही है। जिनमें निम्नलिखित प्रमुख है:-

1. कुमावत समाज सामूहिक विवाह एवं विकास समिति, बंदे के बालाजी, उगारियावास, जयपुर 2. क्षत्रिय मेवाड़ा कुमावत व श्री कृष्ण मंदिर समिति, सांवेर, मध्य प्रदेश 3. क्षत्रिय मेवाड़ा कुमावत समाज संगठन, मंदसौर 4. श्री कुमावत क्षत्रिय समाज शैक्षिक विकास समिति, खेड़ा के बालाजी, माधोराजपुरा, फागी, जयपुर 5. श्री कुमावत क्षत्रिय सामूहिक विवाह समिति (रजि.) जयपुर 6. श्री कुमावत क्षत्रीय सेवा समिति, मलाड, मुंबई 7. नाशिक जिला कुमावत- बेलदार समाज उन्नति मंडल, नासिक, महाराष्ट्र 8. क्षत्रिय कुमावत सेवा समिति, बगरू, जयपुर 9. श्री क्षत्रिय कुमावत समाज कल्याण संस्थान, दहमी कलां, बगरू, जयपुर 10. श्री कुमावत विकास एवं सेवा संस्थान, चित्तौड़गढ़ 11. श्री कुमावत क्षत्रिय विकास समिति लोकसभा क्षेत्र टोंक 12. कुमावत समाज सुधार एवं सेवा समिति, नावां,नागोर 13. श्री कुमावत पंचायत सभा (रजिं.) ब्यावर, अजमेर 14. श्री क्षत्रिय कुमावत समाज धर्मशाला, त्रिवेणी धाम, शाहपुरा, जयपुर 15. क्षत्रिय कुमावत समाज एकता संस्थान, चौमू, जयपुर 16. श्री कुमावत सेवा संस्थान, चौमू, जयपुर।

उपरोक्त समितियों के अलावा भी समाज की अन्य समितियां सामूहिक विवाहों को प्रतिवर्ष अपने-अपने क्षेत्रों में आयोजन कर रही है। हम सभी को समाज के इन पवित्र आयोजन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए, सामर्थ्य अनुसार सहयोग करना चाहिए साथ ही समाज में अविवाहित युवक-युवतियों के परिजनों को समझा कर सम्मेलन में शादी करने हेतु प्रेरित करना चाहिए।

- रामप्रकाश कुमावत (मारवाल)

हमारी वेवबसाइट www.kumawatindiapatrika.com पर आप 'कुमावत इंडिया' पत्रिका के पिछले अंक व अन्य विवरण देख सकते हैं।

सम्पादकीय 3
राष्ट्रीय अध्यक्ष युधिष्ठिर कुमावत का जयपुर में भव्य स्वागत 4
पवन कुमावत ने राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाया व गोल्ड मेडल जीता 5
रमेश गेदर का जन्मदिन : बधाई देने पहुंची 'कुमावत इंडिया' पत्रिका टीम 5
युधिष्ठर कुमावत को 'समाज भूषण' सम्मान 5
उदयपुर में सामूहिक श्रद्धांजलि एव रक्तदान शिविर का आयोजित 6
कमलेश का जिले में प्रथम स्थान 6
राधेश्याम कुमावत उपसरपंच निर्वाचित 6
रेखा कुमावत ने प्रेस कांफ्रेंस की 6
योग खुद के लिए, खुद के माध्यम से, खुद की यात्रा है 7
माता-पिता भगवान का अनमोल आशीर्वाद 8
ठाकुर जी की बारात संग 27 घोड़ों पर दूल्हे तथा 9 बग्घियों में आईं दुल्हनें 9
8 मई 2022, : मदर्स-डे पर विशेष 10
बाल विवाह एक कड़ी चुनौती, उन्मूलन जरूरी 11
कूंबाजी मंदिर की 5वीं वर्षगांठ मनाई 11
5 जून पर्यावरण दिवस : पर्यावरण का रखें ध्यान 12
आकाशवाणी के 'रस कलश' कार्यक्रम में प्रहलाद चंचल 12
अरुण कुमावत विभागीय समिति अध्यक्ष बने 12
आधुनिक व्यापार (स्टार्टअप) और हमारे समाज की भागीदारी 13
झरना करेगी इंग्लिश चैनल पार 14
भारतीय कुमावत क्षत्रिय महासभा ने मनाया 'राष्ट्रीय एकता-अखंडता दिवस' 15
कृषि वैज्ञानिक पद्मश्री डा. सुंडाराम कुमावत का अभिनंदन 15
भक्त प्रह्लाद और भगवान नृसिंह 16
गर्मी में सेहत के लिए रामबाण है 'सत्तू' 16
निर्जला एकादशी का शुभ संदेश- बूंद बूंद पानी का महत्व 17
4000 साल पहले भारत के लोग करते थे उच्च प्रोटीनयुक्त मल्टीग्रेन 'लड्डू' का सेवन 17
स्मृति शेष : श्री चन्द्र प्रकाश अजमेरा 18
राजस्थान सरकार की महत्वपूर्ण योजनायें 19
लाउडस्पीकर बना राजनैतिक टूल 20
ब्रह्माण्ड और हमारा पिण्ड शरीर 22
नेशनल टेक्नोलॉजी डे : 11 मई 23
विशिष्ठ संरक्षक/श्रद्धांजलि 24
विवाह योग्य युवक-युवतियों की सूची 2 5
'कुमावत इंडिया' पत्रिका नहीं मिलने पर यहां सम्पर्क करें 26
सुनीता कुमावत ने मास्टर ऑफ वेटेनरी साइंस में गोल्ड मैडल जीता 27
बाबूलाल मारोठिया की पेंटिंग प्रदर्शित 27
डा. सुकीर्ति चेजारा कृषि प्रसार अधिकारी नियुक्त 27
गर्मियों में शरीर की ठंडक बरकरार रखेगी लस्सीवाला की लस्सी 28
KPL सेशन-5 का शुभारम्भ 29
सिंघाना, झुंझुनू के ओमप्रकाश कुमावत के 29
2 बेटों ने समाज का नाम रोशन किया 29
ज्ञानचंद जालन्दरा का ढ्ढश्वस् में चयन 29
श्रद्धांजलि 30

राष्ट्रीय अध्यक्ष युधिष्ठिर कुमावत का जयपुर में भव्य स्वागत

'कुमावत इंडिया' पत्रिका

'कुमावत इंडिया' पत्रिका द्वारा श्री चेतन बालोदिया ट्रस्टी एवं मुद्रक के निवास पर महासभा के श्री युधिष्ठिर कुमावत राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्री सूरजमल अडानिया राष्ट्रीय महामंत्री तथा संदीप कुमावत राष्ट्रीय प्रवक्ता का भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर 'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से रमेश गैदर अध्यक्ष, रामप्रकाश मारवाल सम्पादक,, चेतन बालोदिया ट्रस्टी, जयसिंह गुड्डीवाल सह-सम्पादक, खेमचंद खड़गटा उप कोषाध्यक्ष आदि भी उपस्थित थे। इस अवसर पर समाज के उत्थान के लिए आपसी चर्चा हुई।

खेड़ापति बालाजी

श्री युधिष्ठिर कुमावत राष्ट्रीय अध्यक्ष कुमावत क्षत्रिय महासभा का खेड़ापति बालाजी, माधोराजपुरा, फागी, जयपुर में हुए सामूहिक विवाह सम्मेलन में विवाह समिति द्वारा हजारों लोगों की उपस्थिति में 3 मई को भव्य स्वागत किया गया।

टीम चेतन धुंधारिया

श्री युधिष्ठिर कुमावत राष्ट्रीय अध्यक्ष का टीम चेतन धुंधारिया की ओर से चेतन कुमावत भाजपा ओबीसी मोर्चा जिलाध्यक्ष जयपुर शहर द्वारा पुष्प गुच्छ एवं स्मृति चिह्न देकर स्वागत किया गया। टीम के अन्य सदस्य भी उपस्थित रहे।

मनोज सिरसवा, नरेंद्र मारवाल, मीडिया प्रभारी जयपुर व्यापार महासंघ व अध्यक्ष नंदपुरी व्यापार मंडल जयपुर, पिन्नूजी, विजेन्द्र मारवाल ने राष्ट्रीय अध्यक्ष का स्वागत किया।

इसी तरह जयपुर के **चित्रकूट नगर** में श्री युधिष्ठिर कुमावत राष्ट्रीय अध्यक्ष, महामंत्री तथा मीडिया प्रभारी का श्री मंगल कुंडलवाल द्वारा स्वागत किया गया।

सांगानेर से राष्ट्रीय प्रतिनिधि नवलकिशोर बबेरिवाल, बनीपार्क में राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री भीमसिंह सिरोहिया, इंद्र सिंह भदानिया ने स्वागत किया। **फागी में** कालूराम मारवाल, ओमप्रकाश उदेवाल, विष्णु कुमावत, रामधन कुमावत, सीताराम कुदीवाल, कालूराम कुमावत, महावीर उदेवाल ने अभिनंदन किया।

पवन कुमावत ने राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाया व गोल्ड मेडल जीता

मध्यप्रदेश के जबलपुर शहर में 5 से 8 मई 2022 तक 4 दिवसीय **सीनियर नेशनल स्ट्रेथ लिफ्टिंग चैंपियनशिप** में जयपुर के **पवन कुमावत** ने 76 किलो भार वर्ग में 137.5 किलो वजन उठाकर नया नेशनल रिकॉर्ड बनाया और गोल्ड मेडल जीता।

इस उपलब्धि पर इंडियन स्ट्रेथ लिफ्टिंग के जनरल सेक्रेटरी श्री बाबुल विकास, गुरू श्री पुष्पेन्द्र सिंह राठोड़, राजस्थान स्ट्रेंथ लिफ्टिंग के जनरल सेक्रेटरी चंद्रेश सोनी, भारतीय स्ट्रेथ लिफ्टिंग टीम के चीफ संदीप कुमार तथा गणमान्य समाजजनों ने पवन कुमावत को बधाई दी।

पवन कुमावत ने कुमावत समाज को फिर से गौरांवित किया हैं, इस उपलब्धि के लिए '**कुमावत इंडिया**' पत्रिका की ओर से पवन कुमावत को हार्दिक बधाई व उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामना।

रमेश गेदर का जन्मदिन

बधाई देने पहुंची 'कुमावत इंडिया' पत्रिका टीम

कुमावत प्रगति ट्रस्ट व कुमावत क्षत्रिय समाज विकास समिति, मालवीय नगर, जयपुर के ऊर्जावान अध्यक्ष श्री रमेश गेदर के जन्मदिन के अवसर पर उनके निवास पर 'कुमावत इंडिया' पत्रिका के मुख्य संरक्षक सुरेंद्र जी नागा, प्रकाशक सी.एम. बड़ीवाल, मुद्रक चेतन बालोदिया एवं श्रीमती भारती तोंदवाल ट्रस्ट सचिव, रामप्रकाश मारवाल संपादक, जयसिंह गुड़ीवाल सह संपादक, खेमचंद खड़गटा उप कोषाध्यक्ष, मनीष कुमावत संपादक मंडल सदस्य, सुरेंद्र मारोठिया एवं अशोक कुमावत व्यवस्थापक मंडल सदस्य, रमेश तोंदवाल, राकेश मरोड़िया आदि ने पहुँच कर उन्हें बधाई दी। इस अवसर पर श्री रमेश गेदर के पिता श्री राम दयाल गेदर व धर्मपत्नी श्रीमती अमिता ने सभी का स्वागत किया तथा मिठाई खिलाई। श्री रमेश गेदर ने पधारे हुए सभी गणमान्य समाजजनों तथा फोन, व्हाट्सएप एवं फेसबुक पर बधाई देने वाले समाजजनों का आभार व्यक्त किया।

भारतीय कुमावत क्षत्रिय महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने किया महाराष्ट्र का दौरा

युधिष्ठर कुमावत को 'समाज भूषण' सम्मान

बेलदार समाज सेवा संघ महाराष्ट्र प्रदेश, मुंबई की ओर से महाराष्ट्र के उल्हासनगर में आयोजित समारोह में उदयपुर के पूर्व सभापति एवं भारतीय कुमावत क्षत्रिय महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष युधिष्ठर कुमावत को 'समाज भूषण' से अलंकृत किया गया।

इस अवसर पर मुम्बई समाज की '**जनगणना-2021**' पुस्तिका व '**वर-वधु परिचय पुस्तिका**' का विमोचन किया गया। इस अवसर पर स्कूली शिक्षा और अन्य क्षेत्र में प्रतिभावान युवाओं, महाराष्ट्र प्रदेश से निर्वाचित राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य व पुस्तिका प्रकाशक प्रवीण रघुनाथ कुमावत, संपादक मंडल भगवान यादव कुमावत, बापू वामन कुमावत, कृष्णा तुकाराम कुमावत, मोहनलाल वेडू कुमावत, श्रीपाद संदीप नाइक, सुदाम रघुनाथ कुमावत, राजेन्द्र रामदास कुमावत, दुर्गादास हीरालाल डान्गे का भी सम्मान किया गया। इस अवसर पर बेलदार समाज सेवा संघ के पदाधिकारी, राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष हरीश बेहिरे, राष्ट्रीय सह गणना मंत्री विनय नाइक, पूर्व राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष बसंत राव, महाराष्ट्र प्रांत के ईश्वर ऊंकार बेलदार, शिवपाल मलिए, प्रदीप कामे, शंकर कुमावत, चंदन ननैन आदि उपस्थित रहे।

उदयपुर में सामूहिक श्रद्धांजलि एव रक्तदान शिविर का आयोजित

उदयपुर शहर में 20 मार्च 2020 से 24 अप्रेल 2022 तक कोरोना कॉल में स्वर्गवासी हुए 123 कुमावत बंधुओं को सामूहिक श्रद्धांजलि एवं रक्तदान कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य श्री रमेश चन्द्र बातरा ने श्रध्दांजलि सभा मे पधारे सभी बन्धुओं, माताओं तथा बहनों का आभार व्यक्त करते हुए जिला महासभा द्वारा सामूहिक श्रध्दांजलि कार्यक्रम को बहुत ही अनूठा बताते हुए इसकी प्रशंसा की।

कार्यक्रम के प्रभारी श्री दयाशंकर जी रावड़िया ने बताया कि जब हम कोरोना कॉल में घरों में बंद थे ऐसे विकट समय में उनकी पूरी टीम ने मात्र 21/- रुपये प्रति परिवार सहयोग राशि ऑनलाइन लेकर करीब 29000/- रुपये जमा किए एवं 21 दिन की ऑनलाइन सामूहिक श्रध्दांजलि रखी गई जिसका समापन 25 मार्च 2021 का हुआ था। साथ ही 123 दिवगंत समाजजनों के परिवारजनों से इनकी स्मृति में महासभा भवन के निर्माण में यथाशक्ति आर्थिक सहयोग करने की अपील की।

अंत में महासभा जिलाध्यक्ष श्री युवराज सिंह नाहर ने श्रध्दांजलि सभा मे पधारे सभी स्वजनों का आभार व्यक्त किया व पीड़ा व्यक्त करते हुए बताया कि उदयपुर में लगभग 10 हजार कुमावत बन्धु निवास करते है किंतु रक्तदान मात्र 18 बन्धुओ ने ही किया। **वी एल मंडावरा, मंत्री** (प्रशासनिक), जिला महासभा, उदयपुर

कमलेश का जिले में प्रथम स्थान

12वीं कक्षा (कृषि संकाय) में पढ़ने वाली कमलेश कुमावत ने 88.2 प्रतिशत अंक लाकर जिला सिंगोलीनगर में प्रथम स्थान अर्जित कर परिवार व विद्यालय के साथ कुमावत समाज को भी गौरांवित किया है। ये छात्रा आदिवासी अंचल कोज्या से आकर यह पढ़ रही है तथा इसी वर्ष इसकी स्कूल में कृषि संकाय शुरू हुआ था। जिले में प्रथम स्थान अर्जित करने पर प्रधानाध्यापिका व विद्यालय स्टाफ के साथ समाजजनों ने कमलेश को बधाई दी।

कुमावत इंडिया पत्रिका की ओर से भी छात्रा कमलेश कुमावत को हार्दिक बधाई व उज्ज्वल भविष्य की कामना।

राधेश्याम कुमावत उपसरपंच निर्वाचित

पंचायत समिति के सालरिया कलां गांव के उपसरपंच पद के लिए हुए चुनाव में श्री राधेश्याम कुमावत निर्वाचित घोषित किए गए।

'**कुमावत इंडिया**' पत्रिका की ओर से श्री राधेश्याम कुमावत को हार्दिक बधाई।

रेखा कुमावत ने प्रेस कांफ्रेंस की

एबी इंटरनेशनल द्वारा 17 मई, 2022 को रेडिसन ब्ल्यू, द्वारका, नई दिल्ली में ब्यूटी आर्टिस्टों की प्रेस कांफ्रेंस की। जिसमें जयपुर की रेखा कुमावत ब्यूटिशियन ने भी हिस्सा लिया तथा कांफ्रेंस को सम्बोधित किया।

बधाई

विज्ञापन

हमारे प्रिय

श्री रामप्रकाश मारवाल एवं श्रीमती सुनीता कुमावत

विवाह की ५५वीं वर्षगांठ 20 जून, 2022

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

शुभेच्छू

आशीष-प्रियंका (पुत्र-पुत्रवधु), दिलीप-मेघना (रीनू), चन्द्रप्रकाश-अरुणा (टीना) (दामाद-पुत्री), रूपचन्द-पार्वती, राजकुमार-उमा, जयसिंह-कौशल्या, सत्यप्रकाश-शकुन्तला (भ्राता-भ्रातावधु)

Ashish Consultant

433A, सूर्यनगर, गोपालपुरा, जयपुर-302015

योग खुद के लिए, खुद के माध्यम से, खुद की यात्रा है

योग एक संस्कृत शब्द है जिसकी उत्पत्ति शब्द 'युज' से हुई है जिसका अर्थ होता है 'जोड़ना'। स्वामी दिगंबर जी के अनुसार, 'योग आत्मा से परमात्मा का मिलन होता है।' योग जीवन जीने का एक सही तरीका है। योग हमें स्वयं को खोजने में मदद करता है। **'योग स्वस्थ जीवन की पहली सीढ़ी है।'**

कुछ सालों से लोगों की जिंदगी में काफी भागदौड़ हो गई है। लोग अपनी नौकरियों और व्यवसाय में बहुत व्यस्त हो चुके हैं। किसी को पैसे की पड़ी है तो किसी को बढ़ती प्रतिद्वंदिता की। लोगों के लिए अब सिर्फ पैसा ही सब कुछ है जिसको कमाने के लिए वह मेहनत करता है। किंतु लोगों में मानसिक तनाव भी बढ़ता जा रहा है। इन परिस्थितियों के चलते योग हमें खुशहाल और समृद्ध बनाने के लिए स्वास्थ्य के इष्टतम स्तर को विकसित करता है।

योग जीवन विज्ञान है जो शरीर के स्वास्थ्य और मन के सामंजस्य से संबंधित है। योग का मुख्य उद्देश्य तनावमुक्त और स्वस्थ दिमाग के साथ एक स्वस्थ शरीर प्रदान करना है। योग का अगर हम नियमित रूप से अभ्यास करते रहे तो हम अपना शरीर और दिमाग उच्च स्तर तक शांत और शुद्ध कर सकते हैं। यह हमारे ज्ञानेंद्रीय अंगों को ठीक से काम करने के लिए नियंत्रित करने की क्षमता को विकसित करता है और हमारे कई रोग भी बिना इलाज के ठीक हो जाते हैं।

योग सूत्र के प्रणेता महर्षि पतंजलि

'योगचित्तव्रतीनिरोध' अर्थात चित्त की वर्तीत्यो का निरोध करना ही योग है। चित्त का तात्पर्य अन्त:करण से है। ब्रह्मकर्ण ज्ञानेन्द्रियाँ जब विषयो का ग्रहण करती है तो मन उस ज्ञान को आत्मा तक पहुँचाता है। आत्मा साक्षी भाव से देखता है। बुद्धि व अहंकार विषय का निश्चय करके उसमे कर्तव्य भाव लाते है। इस सम्पूर्ण क्रिया से जो चित्त में जो प्रतिबिम्ब बनता है, वही व्रती कहलाता है। यह चित्त का परिणाम है। चित्त दर्पण के समान है। अत: विषय उसमे आकर प्रतिबिंब होता है। अर्थात चित्त विष्याकार हो जाता है। चित्त विष्याकार होने से रोकना ही योग कहलाता है। पतंजलि ही एकमात्र व्यक्ति थे, जिन्होंने योग को आस्था, अंधविश्वास ओर धर्म से बाहर निकालकर योग को एक सुव्यवस्थित रूप दिया था।

इसके अलावा योग सूत्र के प्रणेता महर्षि याज्ञवल्क्य, मैत्रायनयुपनिषद, योगपिखोपनिषद, श्रीमद भगवतगीता में योगेश्वर श्री कृष्ण, रांगेय राघव, लिंडग पुराण, अग्निपुराण, स्कन्दपुराण, हठयोग प्रदीपिका भी है।

योग पर महापुरुषों के विचार

- योग का अर्थ है... शरीर, मन और आत्मा को ऊर्जा, शक्ति और सुंदरता से जोड़ना।
- योग केवल कुछ आसनों को दोहराना नहीं है - यह जीवन की सूक्ष्म ऊर्जा की खोज है।
- योग खुद के लिए, खुद के माध्यम से, खुद की यात्रा है... **- भगवद गीता**
- योग वो रौशनी है जो अगर एक बार जलती है तो फिर कभी मद्धम नहीं होती, जितना ज्यादा अभ्यास होगा उतना ही ज्यादा प्रकाश होगा.. - **बीकेएस अयंगर**
- योग यौवन का झरना है.. जितनी आपकी रीढ़ लचीली उतने आप युवा - **बॉब हार्पर**

योग के प्रकार

1. नमस्कार आसन- इस आसन को योग की शुरुआत में किया जाता है। इसमें सीधा खड़े होकर हाथ जोड़ना है। यह मुद्रा प्रार्थना की होती है।

2. व्रजासन- इस योग मुद्रा में पांव को मोड़कर घुटने के बल बैठते है। यह आसन रीड की हड्डी के लिए लाभकारी है।

3. अर्ध चंद्रासन-इस आसन में शरीर को आधे चांद की भांति घुमाया जाता है।

4. नटराज आसन-यह आसन खड़े हुए किया जाता है। इस आसन से कंधे और फेफड़े मजबूत होते है।

5. गोमुख आसन-इस आसन को बैठकर किया जाता है। शरीर को सुडौल बनाने के लिए यह आसन किया जाता है।

6. सुखासन-यह आसन भी बैठकर किया जाता है। इस आसन में नाक से सांस को लेना और छोड़ना होता है। सुखासन तनाव से मुक्ति देता है।

योग करने के फायदे

अगर आप भी स्वस्थ रहने के लिए, योग की मदद लेते है तो योग से आपको आगे बताये, चमत्कारिक लाभ प्राप्त होंगे, जिसे जानकर आपके मन में भी योग करने की इच्छा जाग्रत हो उठेगी।

1.यह बेहतर रोग-प्रतिरोधक है।

2. इससे अच्छी नींद आती है।

3. योग वजन पर नियंत्रण करने में मदद करता है।

4. योग हृदय रोग से बचाव में सहायक होता है।

5. योग करने से मानसिक शांति मिलती है।

6. योग पाचन तंत्र को ठीक करता है तथा इसे करने से कब्ज नहीं होती है।

7. योगाभ्यास से एकाग्रता एवं सकारात्मक विचारों में वृद्धि होती है।

8. साँस लेने में सुधार होता है इससे फेफड़ो की बीमारी व अस्थमा में राहत मिलता है।

9.योग करने से मांसपेशियाँ मजबूत बनती है और मांसपेशियों में होने वाला खिंचाव खत्म हो जाता है। जिससे सिर में उचित रूप से ऑक्सीजन का बहाव होता है और माइग्रेन की बीमारी में आराम होता है।

10. योग शारीरिक क्षमता बढ़ाने में मदद करता है। इससे हम अधिक देर तक तरोताजा रहते है।

11. योग से शुगर लेवल और बैड कोलेस्ट्रोल नियंत्रण में रहता है।

12. योग करने से शरीर में लचीलापन आता है, जल्दी बुढा होने से बचाता है, शरीर को स्वस्थ कर सुन्दर बनाने में मदद करता है और चेहरे पर एक अलग ही चमक दिखाई देने लगती है।

13. योग करने से रक्त प्रवाह बेहतर होता है, लाल रक्त कोशिकाओं में वृद्धि होती है तथा सोडियम की मात्रा संतुलित रहती है।

14. योग करने से जीवन की गुणवत्ता में सुधार आता है तथा पुराना दर्द भी कम करता है।

15. योग करने से मेटाबोलिज्म संतुलित होता है जो भूख को नियमित व नियंत्रित करता है।

16 बहुत से लोग झुककर बैठते है या झुक कर चलते है। जिससे उनकी शारीरिक मुद्रा बदल जाती है और उनमें आत्मविश्वास की कमी नजर आने लगती है। तो नियमित योग करने से इसमें सुधार होता है और व्यक्ति का आत्मविश्वास बढ़ता है।

योग का महत्व : योग विद्या फिर से समाज में लोकप्रिय हो रही है। आज की जीवन शैली से मनुष्य बहुत तनाव में है। इस वजह से वो फिर योग की तरफअपना मुख कर रहा है ओर ये केवल भारत में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में योग का असर हो रहा है। इसमें कई शोधकार्य किये जा रहे है।

योग से ना केवल हमारा शरीर पुष्ट होता है, अपितु मानसिक रूप से भी स्वस्थ रहता है। रोगी शरीर में स्वस्थ मन निवास नही कर सकता है। यदि मन स्वस्थ ना हो तो विचार भी स्वस्थ नही हो सकता है। ओर जब विचार स्वस्थ नही होंगे तो कर्म की साधना कैसे होगी ?

प्राचीन काल में ऋषि-मुनियों द्वारा योग को प्रतिपादित किया गया था तथा तब से ही भारत में योग प्रचलन में है। किन्तु **स्वामी रामदेव** ने योग को जन-जन व घर-घर तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है तथा इससे लोग लाभान्वित हो रहे है। **प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी** को संयुक्त राष्ट्र संघ से 21 जून को ***'अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस'*** घोषित करवाने का श्रेय है। आज विश्वभर में योग का प्रचार-प्रसार हो रहा है जो भारत की नीति **'वसुदेव कुटुम्बकम'** को सही रूप में चरितार्थ कर रहा है। - **रमेश गैदर**

वर्ल्ड पेरेन्ट्स डे-1 जून

माता-पिता भगवान का अनमोल आशीर्वाद

वर्ष 2012 में, संयुक्त राष्ट्र महासभा ने पेरेन्ट्स का पहला वैश्विक दिवस घोषित किया। तब से, यह दुनिया भर में माता-पिता की इकाइयों को सम्मानित करने के लिए 1 जून को प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है। बच्चों के जन्म से बहुत पहले से हीमाता-पिताअनेक जटिलताओ व चुनौतियोको झेलते हैं। पर माता-पिता बनना सबसे सार्वभौमिक अनुभवों में से एक है।

वैश्विकमाता-पिता दिवस-1922 की थीम है-

दुनिया भर में अपने बच्चों के प्रति माता-पिता के संघर्ष और बलिदान का समर्थन करना तथा माता-पिता के मूल्य और स्नेह को स्वीकार करके उनके द्वारा अपने बच्चों के लिए किए गए बलिदानों को महत्व देना।

यह दिन बच्चों के प्रति निस्वार्थ प्रतिबद्धता और इस रिश्ते को पोषित करने वमाता-पिता के आजीवन बलिदान के लिए माता-पिता की सराहना करने के लिए इसे मान्यता दी गई थी।

कोविड -19 महामारी ने माता-पिता की जिम्मेदारियों को बहुत बढ़ा दिया है। उन्होंने न केवल अपने परिवार का आर्थिक रूप से समर्थन किया बल्कि स्वयं को जोखिम में डालकर अपने बच्चों को इससे बचाने का भरसक प्रयत्न करते हुए वो सब कुछ किया जो इस दौर में आवश्यक था। इस वर्ष की थीम दुनिया भर में ऐसे सभी माता-पिता को समर्पित है जो अपने परिवारों के आराम के लिए काम करते हैं, पीड़ित होते हैं और त्याग करते हैं।हमारे माता-पिता वास्तव में जानते हैं कि हमारे लिए सबसे अच्छा क्या है क्योंकि उनके पास जीवन और उसके सभी संघर्षों का अधिक अनुभव है।

आइए हम, अपने माता-पिता के चेहरे पर मुस्कान लाऐ, हम उनकी प्रशंसा करें और परिवार को उनके द्वारा दिए गए आश्रय और खुशी के लिए उन्हें धन्यवाद दें:-

हमारे जीवन में सम्मानित व्यक्तित्व हमारे माता-पिता और दादा-दादी हैं। हमारे माता-पिता हमें भौतिक जरूरतों को पूरा करने और हमें एक बेहतर और सफल व्यक्ति के रूप में ढालने में सक्षम बनाने के लिए बहुत त्याग करते हैं।

माता-पिता ने जो झेला है और उन्होंने हम परप्यार बरसाया है उसके लिये जीवनभर कृतज्ञ होना भी कम है। आज भी जीवन के उतार-चढ़ाव में हमारे माता-पिता ही हमारे साथ खड़ेरहेंगे। जिस समय हमें अपने माता-पिता की आवश्यकता होती है, वे हमारे लिए उपलब्ध होते हैं और कभी पीछे नहीं हटते। माता-पिताहमारी आखिरी सांस तक दृढ़ रहते हैं,जबकि बाकी सभी रिश्ते कमजोर पड जाते हैं।

जिस व्यक्ति ने हमारा साथ दिया, मुझे सीखाया और एक सफल जीवन जीने के गुर सिखाए, वह मेरे पिता हैं। उनके मानसिक, वित्तीय और नैतिक समर्थन ने मुझे इस शानदार करियर तक पहुंचने का मार्ग प्रशस्त किया। एक माँ हमारे जीवन में सबसे ज्यादा देखभाल करने वाली होती है। वह अकेली है जो अपने बच्चे के आराम के लिए हर दर्द सहती है। वह अपने बीमार बच्चे की देखभाल के लिए रात भर जागती है। संक्षेप में कहें तो एक माँ अपने बच्चों के लिए ईश्वर का वरदान होती है।

उनकी प्रार्थनाओं और समर्थन के बिना एक निश्चित स्थिति प्राप्त करना असंभव होताहै। उनके आशावादी रवैये और दयालु शब्दों ने हमेशा हमारे मन को शांति दी। दरअसल, माता-पिता भगवान का सबसे अनमोल आशीर्वाद है, जिसे शब्दों से बताया नहीं जा सकता। इस संसार में वे केवल दो लोग हैं जो अपने बच्चों को खुद से ज्यादा आगे ले जाना चाहते हैं।

अंत में, अपने माता-पिता को उनके महान् धैर्य और हमारेलिए प्यार के लिए धन्यवाद। -**शोभिका,** सवाई माधोपुर

ठाकुर जी की बारात संग 27 घोड़ों पर दूल्हे तथा 9 बग्घियों में आईं दुल्हनें

चित्तौड़गढ़

कुमावत विकास एवं सेवा संस्थान, चित्तौड़गढ़ के तत्वावधान में 3 मई 2022 को सामूहिक विवाह सम्मेलन हुआ। तुलसी संग विवाह के लिए ठाकुरजी मानपुरा गांव में बारात लेकर आए। बिंदोली में इनकी सवारी के पीछे 27 वर, सफेद घोड़ों पर तो वधुएं 9 बग्घियों में सवार थी। गांधीनगर से शुरू हुई बिंदोली मुख्य मार्गों से होते हुए विवाह स्थल आईं, जहां सामूहिक तोरण हुआ। वैदिक मंत्रोच्चार के बीच सभी जोड़ों का पाणिग्रहण संस्कार हुआ। यहां लगभग 6 हजार लोगों का सामूहिक भोज हुआ। कोरोना के बाद पहली बार हुए सम्मेलन में राजस्थान, मप्र व गुजरात से वर-वधु व समाजजन सम्मिलित हुए। आशीर्वाद समारोह में राज्यमंत्री सुरेन्द्रसिंह जाड़ावत, विधायक चंद्रभानसिंह आक्या आदि अतिथि मंचासीन किए गए।

विधायक आक्या ने कुमावत समाज भवन निर्माण के लिए 5 लाख रुपए देने की घोषणा की। आयोजन समिति के अध्यक्ष गोपाललाल डूंगरवाल प्रतापगढ़, वरिष्ठ उपाध्यक्ष रतनलाल गेंदर, कुमावत विकास सेवा संस्थान के सचिव राजकुमार कुमावत, अध्यक्ष बालचंद गेंदर, चारभुजा सेवा संस्थान अध्यक्ष राजकुमार लाडना, मनोहर लाडना ने अतिथियों का स्वागत किया।

यह सम्मेलन कई विशेषताएं लिए रहा। इसमें **दो दिव्यांग वधुओं की भी शादी हुई।** खास बात यह है कि दोनों के वर पूरी तरह सामान्य थे। **चार वधुओं का निःशुल्क विवाह** करवाया गया। इनका खर्च करीब 84 हजार रुपए भामाशाहों ने वहन किया।

बीड़घास गांव निवासी पवन कुमावत की एक बेटी जयश्री 2016 में राष्ट्रपति व दूसरी सोनल 2019 में राज्यपाल स्काउट गाइड में समाजसेवा के लिए सम्मानित हो चुकी हैं। कुमावत समाज संस्था सचिव राजकुमार कुमावत की बहन व भांजी का भी सम्मेलन में विवाह हुआ।

दूल्हा-दुल्हनों के लिए वरमाला स्टेज का नाम चित्तौड़ की ऐतिहासिक नारियों-मीरा, पद्मनी, कर्णावती तथा पन्नाधाय के नाम पर रखा गया। ये सेल्फी पाइंट भी बन गए।

खेड़ापति बालाजी, फागी, जयपुर

जानकी नवमी पर 10 मई, 2022 को खेड़ा, माधोराजपुरा, फागी, जिला जयपुर में श्री कुमावत क्षत्रिय समाज शैक्षिक विकास समिति द्वारा नवम् ''सामूहिक विवाह सम्मेलन'' का आयोजन किया गया, इसमें 22 जोड़े परिणय सूत्र में बंधे। विवाह में सभी नव-दम्पत्तियों को समाज के भामाशाहों ने उपहार दिये व समिति को आर्थिक सहायता दी।

समारोह के मुख्य अतिथि श्री युधिष्ठिर कुमावत (बबेरीवाल) महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष थे तथा समारोह की अध्यक्षता श्री रामेश्वर बम्बोरिया द्वारा की गई। पधारे हुए विशिष्ठ अतिथियों, समाज की समितियों के पदाधिकारियों, भामाशाहों एवं गणमान्य समाजजनों का माला व साफा पहनाकर स्वागत किया गया। मुख्य अतिथि श्री युधिष्ठर कुमावत ने कहा कि ''समाज में एकता व मजबूती के लिए कड़ी से कड़ी जोड़ने का काम करना होगा।'' उन्होंने डा. जूनवाल एवं समिति को सामूहिक विवाह के पुनीत कार्य के लिए बधाई दी।

इसे अनूठा आयोजन बताया तथा समाज की एकता का आह्वान किया। समारोह में अभिषेक गोठवाल (प्रधान माधोराजपुरा), बाबूलाल सिरोहिया (समाजसेवी), गौरी शंकर मारवाल (प्रदेशाध्यक्ष उ.पू. जोन), भंवरलाल उदयवाल (अध्यक्ष चौथ का बरवाड़ा धर्मशाला), भींवाराम दम्बीवाल (कोषाध्य विवाह समिति बन्धे बालाजी), धर्मचन्द भातरा (AA Class कान्ट्रेक्टर), रामपाल जूनवाल, श्रीमती आशा कुमावत (पावर लिफ्टर), 'कुमावत इंडिया' पत्रिका की टीम तथा रमेश गैदर (अध्यक्ष मालवीय नगर समिति, जयपुर) उपस्थित थे।

हनुमानसहाय जूनवाल ने बताया कि खाने की व्यवस्था खुमारियावास, चन्दरियों की ढाणी स्थित जूनवाल परिवार की ओर से की गई। इस अवसर पर लगभग 3000 समाजबन्धु सम्मिलित हुए। पधारे हुए अतिथियों एवं समाजजनों का समिति के अध्यक्ष डॉ. जयनारायण जूनवाल, महामंत्री रामेश्वर दम्बीवाल, संयोजक सुवालाल सैंगठिया, कोषाध्यक्ष ताराचन्द मारवाल, प्रवक्ता सत्यनारायण जूनवाल, उच्चाधिकार समिति अध्यक्ष महादेव मणेठिया, संगठन मंत्री हरिनारायण जूनवाल आदि ने आभार व्यक्त किया। समारोह में मंच का संचालन प्रभु दयाल पीपलोदा (राज्य स्तरीय पुरस्कार से सम्मानित शिक्षक) द्वारा प्रभावशाली तरीके से किया गया।

ब्यावर

श्री कुमावत पंचायत सभा ब्यावर एवं श्री कुमावत सामूहिक विवाह समिति के तत्वावधान में 3 मई, 2022 अक्षय तृतीया पर ब्यावर में 20वें सामूहिक विवाह का आयोजन धूमधाम से हुआ। इसमें तुलसी-सालिगराम जी सहित **5 जोड़े परिणय सूत्र में बंधे।** इस समारोह में शोभायात्रा, तोरण, पाणिग्रहण, स्नेह भोज, अतिथि सत्कार, आशीर्वाद एवं विदाई का कार्यक्रम रखा। समिति द्वारा भामाशाहों के सहयोग से नव दम्पत्तियों को उपहार दिये गये। समारोह के मुख्य अतिथि श्री शंकर रावत (विधायक ब्यावर), विशिष्ठ अतिथि लीलाधर दौराया, गौरीशंकर मारवाल, ब्रह्मदेव झुन्झुनोदिया, प्रभुलाल घोड़ेला व निरंजन देवतवाल आमंत्रित थे। समारोह में श्री कुमावत नवयुवक मण्डल, ब्यावर का भी सहयोग रहा।

मदर्स-डे पर विशेष

मई माह के दूसरे रविवार को मदर्स-डे मनाने की परम्परा अमेरिका की अन्ना जारविस ने मदर्स-डे मनाकर शुरू की। इसके तीन वर्ष बाद सेन्ट एड्रयूज मैथोडिस्ट चर्च में मदर्स-डे मनाया गया। इसके बाद से अनेक देशों में इसे मनाया जाने लगा।

माँ, बच्चे के गर्भ में आने से जन्म तक तथा जन्म होने से आगे भी हर समय अपने बच्चे का ध्यान रखती है चाहे वे स्वयं भूखी रहे पर बच्चे के पेट को भरने के लिए कुछ भी करने को तैयार रहती है। खुद गीले में सोती है और बच्चे को सूखे में सुलाती है कि कहीं वह बीमार न हो जाए। बच्चे के पालन-पोषण, शिक्षा, स्वास्थ्य, नौकरी/व्यवसाय, विवाह आदि के लिए माँ अपना समर्पण करती ही रहती है। जब तक बच्चा घर ना आ जाए उसे चैन नहीं पड़ता। उसे सदैव यही चिन्ता रहती है कि बच्चे ने कुछ खाया की नहीं।

जब बच्चा माँ के पेट में होता है तब से माँ वही चीजें खाती हैं जो बच्चे की हैल्थ के लिए अच्छी हो।

जब बच्चा जन्म लेता है उसकी माँ का भी जन्म माना जाता है। इससे पहले वह स्त्री होती है। बच्चे और माँ का निर्मल एवं नाजुक निस्वार्थ रिश्ता होता है। वह अपनी संतान को असीम प्रेम करती है। संसार की रचना भले ही ब्रह्मा जी ने की है लेकिन माँ के रक्त से एक बच्चे के शरीर, चेतन और अवचेतन की रचना होती है। एक माँ ही बच्चे को इस संसार में लाने की प्रसव पीड़ा झेलती है। फिर बच्चे के जन्म से बड़े होने तक, बच्चे के खान-पान और स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखती है तथा स्वयं की सेहत पर ध्यान नहीं रख पाती।

माँ वह होती है जो अपने जिगर के टुकड़े को बचाने के लिए कभी काली तो कभी दुर्गा बन जाती है। एक ऐसी ही घटना आपके समक्ष प्रस्तुत है-

माँ ने तेंदुए के पंजे से बचाया अपना लाल : मध्य प्रदेश की किरण बैगा को पति ने छोड़ दिया। वह अपनी दो लड़कियों एवं एक लड़के का पिहर के गांव में रहकर मजदूरी करके पालन-पोषण करती थी। 28 नवम्बर, 2021 की शाम जब अंधेरा होने लगा वह अपने बच्चों के साथ बैठी थी, उस वक्त उसके जीवन में भूचाल आ गया। उसके 5 वर्षीय एक मात्र बेटे राहुल को तेंदुआ उठा ले गया। बेटा चिल्ला रहा था बचाओ-बचाओ। उसकी दर्द भरी पुकार सुन माँ आवाज की दिशा में दौड़ी। वह अंधेरे में कई जगह गिरी पड़ी किन्तु हिम्मत नहीं हारी। लगभग 300 मीटर दूरी पर वह यह देखकर सन्न रह गई कि तेंदुए ने बच्चे को अपने पंजों में कसकर पकड़ रखा है। तेंदुए के नुकले नाखुन बच्चे के गाल पर आरपार हो गये थे व पीठ के के मांस का एक टुकड़ा भी तेंदुए ने नोचकर खा लिया था।

एक क्षण की भी देरी किये बिना किरण की ममता जाग उठी और बिना किसी हथियार लकड़ी आदि के वह वहशी तेंदुए पर **आव देखा न तांव** झपट पड़ी। वह स्वयं भी तेंदुए के पंजों से लहुलुहान हुई। तेंदुए की शक्ति से लगे धक्के से बार-बार गिरी परंतु हिम्मत नहीं हारी। जब तेंदुए के पंजे से बच्चा छूट गया तो माँ ने बच्चे से कहा कि वह उसकी पीठ को कसकर पकड़ ले। उसे मालूम था कि तेंदुए से उसका शिकार छुटने पर वह उस पर दुगनी ताकत से वार कर सकता है। यद्यपि इस लड़ाई में उसकी हिम्मत जवाब दे गई थी, पर हौंसला बरकरार था। उसने सोच लिया था कि आज या तो वह स्वयं नहीं रहेगी या फिर तेंदुआ। इतने में गांव वाले शोर मचाते हुए आ गए और तेंदुआ डरकर भाग गया। उसने अपने बच्चे को बचा लिया किंतु उसके बच्चे की एक आंख, गाल और पीठ लहुलूहान हो गई थी। एक माँ ही वक्त पड़ने पर अपने बच्चे के लिए दुर्गा भी बन सकती है। उसके जज्बे को सलाम।

मदर्स-डे के अवसर पर बच्चों को भी संकल्प लेना चाहिए कि वो अपनी माँ का पूरा-पूरा ध्यान रखें तथा उसे वो सब खुशी दें जिसकी वो नैसर्गिक रूप से हकदार है। घर के कामकाज में माँ की जिम्मेदारियों को कम करें, स्वास्थ्य का नियमित चैकअप कराएं, माँ के खान-पान में फाइबर, प्रोट्रीन, फ्रूटस, हरि सब्जियों आदि को सम्मिलित कराएं। माँ को भी आराम की जरूरत होती है इसलिए काम नहीं आराम कराएं किंतु गार्डनिंग कर सकती हैं व पार्क में घूमाने ले जा सकते हैं। साथ यह भी ध्यान रहे कि माँ तनाव रहित रहे, इस हेतु थोड़ा समय निकालकर के माँ से बातचीत करते रहें तथा खाना माँ के साथ खाएं जिससे उसे अच्छा लगेगा।

माँ पूर्ण शब्द है, ग्रंथ है, माँ विद्यालय है।
यह बीज मंत्र है, हर सृजन का आधार है, माँ।
मंत्र, तंत्र व यंत्र की सफलता की नींव है, माँ।

- भारती तोंदवाल

बाल विवाह एक कड़ी चुनौती, उन्मूलन जरूरी

कानून के अनुसार वैवाहिक उम्र निर्धारित है जिसमें लड़की के लिए 18 वर्ष व लड़के लिए 21 वर्ष है। भारत में बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम, 2006 लागू है जो बाल विवाह जैसी कुप्रथा की रोकथाम के लिए बनाया गया है। केवल भारत में ही बाल विवाह नहीं होते हैं बल्की इंडोनेशिया, फिलीपिन्स, नेपाल, अफगानिस्तान, बांग्लादेश, नाइजीरिया, ईरान, थाईलैण्ड आदि देशों में भी यह कुप्रथा प्रचलित है।

बाल विवाह के कारण : बाल विवाह की जड़ों में है असमानता, असुरक्षा की भावना, गरीबी तथा अशिक्षा। यह ही लिंग भेद एवं दहेज का कारण है। इसलिए बाल विवाह करना प्रोत्साहित हुआ तथा कहीं-कहीं तो इसे सामाजिक व पारिवारिक परम्परा मान लिया गया।

बाल विवाह के परिणाम : कम उम्र में विवाह होने से लड़कियां शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वयं की सुरक्षा से वंचित हो जाती है। वह कम उम्र में मानसिक व शारीरिक रूप से माँ बनने की स्थिति में ही नहीं होती और यदि फिर भी गर्भधारण हो जाता है तो वो या तो कमजोर बच्चे को जन्म देगी या स्वयं का जीवन जोखिम में डाल देगी। बच्चे के जन्म के बाद वह उसकी परवरिश करने की स्थिति में नहीं रहती तथा ससुराल वालों के ताने सुन-सुनकर मानसिक तनाव में रहती है। वहीं दूसरी ओर अशिक्षा या अल्पशिक्षा के कारण आर्थिक रूप से सक्षम नहीं हो पाती अर्थात वह अक्षम, असक्त व दूसरों पर निर्भर हो जाती है। यह क्रम आगामी पीढ़ी में चलता रहता है।

बाल विवाह उन्मूलन के प्रयास : इथोपिया के अदीसाबाब में वर्ष 2011 में बाल विवाह की समस्या के निवारण हेतु विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों ने चर्चा की व कार्यनीति बनाई। आर्कविशप डेसमण्ड टूटू की अध्यक्षता में ''गर्ल्स नॉट ब्राइड्स'' का गठन एडिस में हुआ। इसका एक सम्मेलन वर्ष 2012 में दिल्ली में भी हुआ जिसमें भारत में बाल विवाह उन्मूलन के लिए कार्ययोजना बनी। यूनिसेफ की रिपोर्ट ''**बाल विवाह क्यों नहीं**'' में स्वीकारा गया कि बाल विवाह एक लड़की को उसके स्वास्थ्य, शिक्षा और चयन के अधिकारों से वंचित करता है, साथ ही विकास लक्ष्यों की प्रगति को बाधित करता है।

राजस्थान में महिला एवं बाल विकास विभाग, यूनिसेफ, विकास अध्ययन संस्थान, उरमूल ट्रस्ट आदि ने राज्य को बाल विवाह मुक्त करने की दिशा में सामुहिक प्रयास किए हैं। इससे बाल विवाह में कमी आयी है पर अभी भी विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में बाल विवाह होने के समाचार मिल रहे हैं। इसकी रोकथाम के लिए प्रशासनिक अधिकारियों, पुलिस, अन्य सूचना तन्त्रों को सरकार ने निर्देश दिये हैं।

राज्य ने बाल विवाह मुक्त बनाने व लड़के-लड़कियों को सक्षम बनाने का परिकल्पना, के साथ आगे बढा जा रहा है। लड़के-लड़कियां अपने निर्णय विवेक से स्वयं लेने में समर्थ हो। सामाजिक दबाव से मुक्त रहकर जीवन जीने योग्य बन सके तथा शिक्षा, स्वास्थ्य, क्षमता, रोजगार के अवसरों का लाभ ले पाये। **जातिगत संगठन भी बाल विवाह उन्मूलन में सहभागी बने- सामाजिक विचारों, विश्वासों, रीतियों, परम्पराओं तथा व्यवहारों में बदलाव लाये, तब ही समाज उन्नतिशील होगा।** ग्राम समितियां, पंचायतें, एनजीओ आदि संस्थाएं बाल विवाह की बुराईयों का प्रचार-प्रसार करके उन्हें रोकने में सहायक बने। इससे एक नाबालिक लाडली (लड़की) का स्वास्थ्य, भविष्य तथा जीवन बचेगा। **क्या आप ऐसा नहीं चाहते ? यदि चाहते है तो सदैव के लिए त्याग दे बाल विवाह की कुप्रथा।**

कूंबाजी मंदिर की 5वीं वर्षगांठ मनाई

श्री कूंबाजी महाराज कुमावत सेवा समिति बालराई के तत्वावधान में मंदिर की 5वीं वर्षगांठ 13 मई, 2022 पर धार्मिक आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम में समाज की सात पट्टियों का सामूहिक स्नेह मिलन होता है। इसमें समाज में शिक्षा व राजनीति में विकास, बालिका शिक्षा पर चर्चा के साथ भजन संध्या तथा महाप्रसादी का आयोजन होता है।

समारोह के मुख्य अतिथि श्री जोराराम कुमावत (विधायक), विशिष्ठ अतिथि नारायण कुमावत (उपाध्यक्ष भाजपा, पाली), सायरा देवी, अशोक कुमावत, लादूराम मुलेबा, सुजाराम कुमावत (सरपंच आहारे), केसाराम कुमावत सरपंच, बालराई, जोगराम कुमावत सरपंच तेवाली, सत्यप्रकाश पटेल (भारतीय किसान मजदूर यूनियन), गोविन्द कुमावत पार्षद सुमेरपुर, जोधाराम कुमावत पार्षद रानी आदि गणमान्य लोगों ने शिरकत की। इस अवसर पर संत महात्माओं का माला पहनाकर व शॉल ओढ़ाकर स्वागत किया। भामाशाहों को भी सम्मानित किया गया। अतिथियों ने समाज बंधुओं से एकजुट रहने एवं राजनैतिक क्षेत्र में अधिक से अधिक सक्रिय रहने पर जोर दिया।

5 जून पर्यावरण दिवस : पर्यावरण का रखें ध्यान

हमारे पुरातन धर्म ग्रंथों में भी पर्यावरण पर विशेष ध्यान दिया गया था, उदाहरण स्वरूप कंदपुराण में एक सुंदर श्लोक है:

अश्वत्थमेकम् पिचुमन्दमेकम्
न्यग्रोधमेकम् दश चिञ्चिणीकान्।
कपित्थबिल्वाऽऽमलकत्रयञ्चपञ्चाऽऽम्रमुप्त्वा नरकन्न पश्येत्।।

अश्वत्थ: = पीपल (100% कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है)
पिचुमन्द: = नीम (80% कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है)
न्यग्रोध: = वटवृक्ष (80% कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है)
चिञ्चिणी = इमली (80% कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है)
कपित्थ: = कविट (80% कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है)
बिल्व: = बील (85% कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है)
आमलक: = आवला (74% कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है)
आम्र: = आम (70% कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है)
(उप्ति = पौधा लगाना)

अर्थात् जो कोई इन वृक्षों के पौधो का रोपण करेगा, उनकी देखभाल करेगा उसे नरक के दर्शन नहीं करने पड़ेंगे। इस सीख का अनुसरण न करने के कारण हमें आज इस परिस्थिति के स्वरूप में नरक के दर्शन हो रहे हैं। पर अभी भी कुछ बिगड़ा नही है, हम अभी भी अपनी गलती सुधार सकते हैं और गुलमोहर, निलगिरी जैसे वृक्ष अपने देश के पर्यावरण के लिए घातक हैं। पश्चिमी देशों का अंधानुकरण कर हम ने अपना बड़ा नुकसान कर लिया है। पीपल, बड और नीम जैसे वृक्ष रोपना बंद होने से सूखे की समस्या बढ़ रही है। ये सारे वृक्ष वातावरण में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ाते है। साथ ही, धरती के तापनाम को भी कम करते है।

हमने इन वृक्षों के पूजने की परंपरा को अन्धविश्वास मानकर फटाफट संस्कृति के चक्कर में इन वृक्षों से दूरी बनाकर यूकेलिप्टस (नीलगिरी) के वृक्ष सड़क के दोनों ओर लगाने की शुरूआत की। यूकेलिप्टस झट से बढ़ते है लेकिन ये वृक्ष दलदली जमीन को सुखाने के लिए लगाए जाते हैं। इन वृक्षों से धरती का जलस्तर घट जाता है। विगत 40 वर्षों में नीलगिरी के वृक्षों को बहुतायात में लगा कर पर्यावरण की हानि की गई है।

शास्त्रों में पीपल को वृक्षों का राजा कहा गया है।

मूले ब्रह्मा त्वचा विष्णु शाखा शंकरमेवच।
पत्रे पत्रे सर्वदेवायाम् वृक्ष राज्ञो नमोस्तुते।।

भावार्थ जिस वृक्ष की जड़ में ब्रह्माजी, तने पर श्री हरि विष्णु जी एवं शाखाओं पर भगवान शंकर जी का निवास है और उस वृक्ष के पत्ते-पत्ते पर सभी देवताओं का वास है। वृक्षों के ऐसे राजा 'पीपल' को नमस्कार है। पुरातन धार्मिक ग्रन्थों में पर्यावरण बचाने का वर्णन हमारे भारतीय समाज की पर्यावरण बचने की सजगता को व्यक्त करता है तथा इसी कारण हजारें वर्षों तक हमारी पृथ्वी संरक्षित रह पायी। जिसकी चिंता आज विदेशी करने लगे हैं।

आगामी वर्षों में प्रत्येक 500 मीटर के अंतर पर यदि एक एक पीपल, बड़, नीम आदि का वृक्षारोपण किया जाए, तभी अपना भारत प्रदूषणमुक्त होगा। घरों में तुलसी के पौधे लगाना होंगे। हम अपने संगठित प्रयासों से ही अपने 'भारत' को नैसर्गिक आपदा से बचा सकते हैं।

भविष्य में भरपूर मात्रा में नैसर्गिक ऑक्सीजन मिले इसके लिए आज से ही अभियान आरंभ करने की आवश्यकता है। आइए, हम पीपल, बड़, बेल, नीम, आंवला, आम आदि वृक्षों को लगाकर आने वाली पीढ़ी को नि:रोगी एवं **'सुजलां सुफलां पर्यावरण'** देने का प्रयत्न करें। - **हरिशंकर कुमावत,** झोटवाड़ा, जयपुर

आकाशवाणी के 'रस कलश' कार्यक्रम में प्रहलाद चंचल

आकाशवाणी जयपुर पर 'रस कलश' कार्यक्रम 'मायड़ भाषा की काव्य गोष्ठी' की रिकार्डिंग हुई जिसमें हमारे समाज के उदयमान कवि प्रहलाद चंचल भी थे। इसका प्रसारण दिनांक 24.5.2022 को रात्रि 9.30 पर आकाशवाणी जयपुर-आमेर चैनल पर किया जाना हैं।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से कवि चंचल को हार्दिक बधाई।

अरुण कुमावत विभागीय समिति अध्यक्ष बने

सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग राजस्थान की मंत्रालयिक विभागीय समिति के अध्यक्ष पद पर सर्वसम्मति से अरुण कुमावत को निर्वाचित किया गया है।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से अरुण कुमावत को बधाई।

आधुनिक व्यापार (स्टार्टअप) और हमारे समाज की भागीदारी

पिछले एक दशक से हमारे समाज के युवाओं ने पारम्परिक व व्यवसायिक शिक्षा में एक चिन्हित सफलता अर्जित की है। बदलते प्रोद्योगिकी युग में आज जीवनोपयोगी हर उत्पाद, सेवा, सुविधा, चिकित्सा, व्यापार, यातायात व दूरसंचार हमारे हाथ में एक उंगली के इशारे मात्र दूर रह गया है.. !!

रिलाइंस जिओ की 2 वर्ष मुफ्त इंटरनेट सेवा ने तो मानो सैकड़ों वर्षो से वंचित समाज में एक क्रांति ला दी है।

आज हर एक व्यक्ति के पास कमोबेश स्मार्टफोन पहुंच चुका है, जिसके चलते आज सामाजिक व आर्थिक दूरियां खत्म हो चुकी है।

कोविड जैसी महामारी ने हमारी पारम्परिक सोच को पूरी तरह से झकझोर के रख दिया। इंटरनेट ने शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार, सेवा आदि के आयामों को बदलकर रख दिया है।

इस प्रोधोगिकी क्रांति को वर्तमान मोदी सरकार ने पिछली सरकार के स्टार्टअप विजन को बड़ी चतुराई व समय की मांग के अनुसार एक नई दिशा दी है जिसके फलस्वरूप आज OYO, OLA, Zometo, Paytm, Flipkart, Easy Trip, ByJu, जैसे अनेक स्टार्टअप ने देश मे युवाओं व पारंपरिक व्यवसायियों को नए Problem Solving विचारों की तरह काम करने के लिए प्रेरित व अग्रसर किया है।

Machine Learning & Artificial Intelligence के आविष्कार ने देश-दुनिया के आर्थिक, सामाजिक तथा व्यावसायिक मापदंडों को पूरी तरह से बदल कर रख दिया है। इन आधुनिक तकनीकों ने अकल्पनीय उन्नति की है, जिसके फलस्वरूप बैंक में जाकर लेनदेन करना एक बीते जमाने की बात हो गई है। आज 95% बैंकिंग कार्य मोबाइल के एक क्लिक मात्र से हो जाता है। इसी प्रकार खाना, राशन, दवाइयां, डॉक्टर, यातायात इत्यादि अनेक सेवाएं उँगलियों के इशारे मात्र की मोहताज रह गई है।

इस बदलते परिवेश में हम अगर हमारे समाज व समाज के युवाओं की बात करें तो उन्होंने भी अपने कदम-ताल को बड़े बेहतर ढंग से मिलाने की लगातार कोशिश की हैं। आज हमें सोशल मीडिया के माध्यम से आये दिन हमारे समाज के युवक-युवतियों की प्रशासनिक सेवाओं, बैंकिंग क्षेत्रों, डॉक्टर, CA, CS, Lawyer, MBA, Engineer, व अन्य व्यवसायों में उपस्थिति देखने को मिल रही है।

समाज की पिछली व वर्तमान पीढ़ी ने हमारे पारम्परिक व्यवसाय जैसे भवन निर्माण, हैंडीक्राफ्ट, कला, कास्तकारी इत्यादि में देश-विदेश में अपनी एक अलग जगह बनाई है। परन्तु हम अभी भी अन्य विकसित समाज के तुलना में काफी पीछे है।

आज अगर हम स्टार्टअप की बात करे तो मुश्किल से कोई 15-20 युवा उद्यमी से ज्यादा नहीं होंगे, उनमें भी कोई राज्य व देश में अपनी अलग पहचान बना सके ऐसी क्षमता दिखाई नहीं दे रही है। इसका सबसे बड़ा कारण है हमारी सीखने व अपने आप को अग्रणी समाजों में समावेश करने की इच्छाशक्ति की कमी है। हमने इसके पीछे के मूल कारणों को समझने की लगातार पिछले 5 वर्षो में सामाजिक संस्थानों, उधमियों व युवाओं के संपर्क में रह कर शोध की है उसमे 10 कारण मुख्यत चिन्हित हुए है, जो इस प्रकार है :-

1. आधुनिक शिक्षा :- वर्तमान व भविष्य की आधुनिक शिक्षा के व्यवहारिक ज्ञान व उपयोग व भविष्य की मांग को दरकिनार कर परम्परागत शिक्षा की डिग्री लेने पर ध्यान।

2. विकसित समाज की उपेक्षा :- विकसित समाज के युवाओं उधमियों का अनुसरण न कर उनसे वास्तविक प्रेरणा ग्रहण नहीं करना।

3. सरकारी नौकरी का आकर्षण :- ग्रामीण व 2-3 टायर शहरों के युवाओं व उनके अभिभावकों में सरकारी नौकरी के प्रति गहरी आस्था होना (जिसमें नौकरी का सुनिश्चित होना, उधमी की सोच को आजीवन नौकरशाही में परिवर्तित कर देती है)।

4. जोखिम :- 99% युवा जोखिम लेने की क्षमता को विकसित करने की जगह एक सुरक्षित नोकरी या आजीविका को ही तरजीह देते पाए गए। उनमें उधमी होने का साहस ही नहीं दिखता है जिससे उनके जोखिम लेने की क्षमता निरन्तर क्षीण हो रही है।

5. अभिभावकों की अदूरदर्शिता :- वास्तविक रूप में विशेषत: पिताजी का अपने बच्चों को यह सिखाया जाना कि 'जोखिम लेना व व्यापार करना हमारा काम नहीं है' जो बच्चे की क्षमता को विकसित करने में घातक साबित होता है। यह सोच किशोरावस्था से व्यस्क होने तक एक नासूर कि तरह फैल जाती है। जिसके युवक अपने अभिभावकों के सपनों को पूरा करने का साधन मात्र बन कर रह जाता है और यही गहन सोच फिर तीसरी पीढ़ी में एक आनुवांशिकता का रूप ले लेती है जो किसी भी समाज की उन्नति के लिए सबसे घातक है।

6. अनुभव की उपेक्षा :- दुनिया के सफल-असफल अनुभव को न समझना और सीखने व सुनने की कमी, जो एक युवा के ज्ञान व जोखिम की क्षमता को कमतर करते जाती है। देश-विदेश के हजारों ऐसे उधम व उधमियों की सफलता/असफलता के उदाहरण आज उपलब्ध है। इससे काफी कुछ सिख सकते है जिससे

उनकी व्यापार में की गई गलतियों व सही निर्णयों को हमारे व्यापारिक प्रयासो में 'Tested & Proven' उदाहरण स्वरूप उपयोग किया जा सकता है। स्वामी विवेकानंद का एक बहु प्रसिद्ध कथन है 'हमें दूसरों की गलतियों व अनुभवों से सीखना चाहिए न कि स्वंय अनुभव करके पछतायें।'

7. समय की कीमत :- समय ऐसा धन है जो किसी भी व्यक्ति के लिए सबसे महत्वपूर्ण व बेशकीमती है। परन्तु हमारे युवाओं में सामान्य व्यावहारिक ज्ञान को अर्जित करने की आयु सीमा 32-40 वर्ष तक देखी गई है, जबकि किसी भी उद्यम को करने और जोखिम लेने का सबसे बेहतरीन समय 16 से 26 वर्ष आयु तक का माना जाता है। क्योंकि इस उम्र में व्यक्तिगत जिम्मेंदारियों और निजी आवश्यकताओं की कमी होती है इसलिए यह एक स्वर्णिम समय होता है, जोखिम लेने व प्रयासों के निरन्तर करने, अनुभव तथा परिपक्वता विकसित करने का।

8. सलाहकार :- हमारे युवा और पारम्परिक पीढ़ी कभी भी व्यावसायिक सलाहाकार नहीं रखती है, वह हर कार्य को स्वयं के अनुभव और तर्क से ही करने की चेष्टा करती है। जबकि उस कार्य का अनुभव व ज्ञान हमें प्रारम्भ में नही होता है। फलस्वरूप हमें नुकसान होना या असफल होना सम्भावित होता है।

10. काल्पनिक सोच :- 'हम अलग है, जो औरों के साथ हुआ है वो हमारे साथ नही होगा, जीवन के सभी घटना क्रम से हम अछूते रहेंगे।' यह स्वंय की एक काल्पनिक सोच है जो जीवन के सबसे उत्तम समय को नष्ट कर देती है, फलस्वरूप जीवन में थोड़े से व्यवहारिक कष्ट आते ही हम आगे बढ़ने की संभावनाओं को सामान्य ढरे पर लाकर खड़ा कर देते है। अत: हमारा युवाओं व अभिभावकों से निवेदन है कि विषम परिस्थितियां, आपात घटनाएं, हानि, नुकसान, बीमारी, घाटा, धोखा, मृत्यु यह सभी जीवन के अटल घटक है जो हम सभी के साथ समय अनुसार होते हैं, इनसे घबराकर कर नहीं अपितु डट कर सामना करना ही पुरुषार्थ है। अत: इस काल्पनिक सोच से जल्द से जल्द निकलना चाहिए। अभिभावकों को अपने बच्चों को कष्ट ना हो ऐसी परिस्थिति ना बनाये बल्कि उन्हें इनसें जोखिम उठाने, लड़ने व सबल होने की शिक्षा दे ताकि उनके जीवन में व्यक्तिगत व व्यावसायिक कठिनाइयां एक खेल मात्र बनकर रह जाये।

10. सन्तुष्टि का भ्रम :- व्यापारिक सन्तुष्टि की सोच की समस्या हमारे समाज के कमोबेश हर एक व्यक्ति के साथ है, चाहे वो छोटा व्यापारी हो या बड़ा। एक सामान्य सफलता मिलने के बाद हमारे समाज के उद्यमियों में 'सफलता के छीन जाने का' भय सताने लगता है। यह एक ऐसा डर है जो अथक प्रयासों से अर्जित की गई मेहनत, ईमानदारी, व्यापारिक, व्यावहारिक कुशलता, पुरषार्थ आदि को सिर्फ भाग्य मान लेते है। जिसके चलते ''जो है बस पर्याप्त है, अब इससे आगे नही जाना है, क्या करना है और कमाकर के , क्या करेंगे पैसों का'', यह सोच एक सफल व्यापार को भी उसके सर्वोच्च स्तर पर जाने से रोक देती है और ठहराव के बाद सफलता की ढलान निश्चित है।

45-50 लाख तक की जनसँख्या वाले समाज में हमारी आज तक कोई कम्पनी नही है जो देश के प्रतिभूति बाजारों में सूचीबद्ध हो ऐसा कोई स्टार्टअप नही है जो हमारी पहचान राज्य, देश या अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बना सके।

इस लेख के माध्यम से हम सिर्फ ये कहना चाहते है कि हमारे समाज में कला, व्यापार, आरंभिक साहस, धैर्य, ईमानदारी, निष्ठा व कार्य के प्रति लगन की कोई कमी नहीं है, अगर किसी बात की कमी है तो वो है स्वंय को अग्रणी समाजों से कमतर समझना, अपने उधमों को बाजार की ऊंचाइयों तक न ले जाने की भावना।

यकीन मानिए, हमने हजारों उधमियों को देखा, सुना, समझा है और पाया कि वो अपने आप में असीम क्षमता रखते हैं सफलता के परचम लहराने के लिए। अगर उन्हें सही मार्गदर्शन व सलाहाकार मिले और वो स्वंय भी सीखने व निरन्तर बढ़ने की इच्छाशक्ति अपनाए।

- मुकेश कुमावत (निमिवाल), मुम्बई

झरना करेगी इंग्लिश चैनल पार

उदयपुर की झरना कुमावत जुलाई में 5 सदस्य इंग्लिश चैनल रिले टीम में भागीदारी करते हुए **डोवर बीच से फ्रांस तक** का 33 किलोमीटर का सफर तय करते हुए इंग्लिश चैनल पार करेगी। झरना पिछले 12 साल से इंग्लैंड की एक्सेस में रह रही है। झरना कुमावत ने लंदन मैराथन में भी हिस्सा लिया था। इसका आयोजन टाइगर नामक चैरिटी संस्थान की ओर से किया जा रहा है। यह संस्था दक्षिण एशिया, अमेरिका व इंडोनेशिया में समुद्री तटों के बच्चों व स्विमिंग कोच को तैराकी व बचाव के तरीके सिखाती है। झरना को 1500 पाउंड इकट्ठा करने का जिम्मा दिया गया जिसका 90% इकट्ठा हो चुका है अब ज्यादा से ज्यादा फंड चैरिटी हेतु इकट्ठा करने का लक्ष्य है। इस रिले रेस में ब्राजील, मोजांबिक, केन्या, पेरू व इंडोनेशिया की टीमे भाग ले रही है। इंग्लिश चैनल पार करने के लिए हेलीकॉप्टर का खर्चा स्वयं उठाना पड़ता है किंतु चैनल पार करने व ट्रेनिंग का खर्च चैरिटी संस्था द्वारा उठाया जाता है। इंग्लिश चैनल को पार करने के लिए प्रात: 2:30 बजे स्विमिंग शुरू करनी होती है तथा 33 किलोमीटर का फांसला 12 से 18 घंटे में पूरा करना होता है।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से **झरना कुमावत** को इंग्लिश चैनल पास करने के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भारतीय कुमावत क्षत्रिय महासभा ने मनाया 'राष्ट्रीय एकता-अखंडता दिवस'

- **राष्ट्रीय प्रतिभाओं का किया सम्मान**
- **गौरवशाली रहा-कुमावत समाज का इतिहास**
- **76 वर्ष पूर्ण होने पर समाज को संगठित करने हेतु देश में वर्ष भर होंगे सामाजिक आयोजन**

उदयपुर। भारतीय कुमावत क्षत्रिय महासभा (रजि.) के 76 वर्ष पूर्ण होने पर नगर निगम (टाउन हॉल) स्थित पंडित दीनदयाल उपाध्यक्ष सभागार में 19 मई, 2022 को 'राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता' दिवस मनाया गया। इस अवसर पर समाज की राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय प्रतिभाओं का सम्मान किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत भगवान श्रीराम के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर ध्वज-गान के साथ हुई।

समारोह के अति विशिष्ट अतिथि कृषि वैज्ञानिक **पद्मश्री डा. सुंडाराम कुमावत** ने संबोधित करते हुए कहा कि सभी क्षेत्रों में कुमावत समाज की प्रतिभाओं का देश के इतिहास और विकास में अच्छा प्रदर्शन रहा है, उन्होंने कृषि को प्रकृति से जोडने का काम किया है, कम पानी में भी पौधों को पोषक कैसे मिले, इस पर भी शोध किया गया, राजस्थान की देशी बीजों को संरक्षित किया, हमारी नव प्रतिभाओं को आगे बढ़ाने के लिए समाज को आगे आना होगा।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि नगर निगम महापौर गोविंद सिंह टांक ने कहा कि यह हमारे लिए गौरव की बात है कि डा. सुंडाराम कुमावत पद्मश्री से सम्मानित हुए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए भारतीय कुमावत क्षत्रिय महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष युधिष्ठर कुमावत ने कहा कि कुमावत समाज की मूल उत्पत्ति राजस्थान में हुई। यहां से कुमावत समाज के लोग भारत के विभिन्न राज्यों में अपनी प्रतिभा के बल पर देश व समाज के विकास में अपना योगदान दे रहे हैं। सीकर जिले के दांता निवासी कृषि वैज्ञानिक पद्म श्री सुंडाराम कुमावत आज हमारे बीच आए, शोध के प्रति इनका समर्पण, सादा जीवन हम सभी के लिए प्रेरणादायी रहेगा।

इस अवसर पर अतिथियों ने **जादूगर आंचल** का भी सम्मान किया। इस दौरान आंचल ने जादू प्रदर्शन भी किया। **राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय कियाकिंग खिलाड़ी नेहा** को अभिनंदन पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया। नेहा ने अब तक राष्ट्रीय-अतंरराष्ट्रीय स्तर पर 8 मेडल जीते हैं। इतिहासविद् व समाजसेवी भूजल वैज्ञानिक **मदनमोहन टांक** का भी अभिनंदन किया गया।

विशिष्ठ अतिथि राष्ट्रीय जनगणना मंत्री हरिसिंह घटेलवाल व अतिथियों ने जनगणना पोस्टर का विमोचन किया, इसके तहत देश भर में घर-घर जाकर समाज की जनगणना की जा रही है। इसी तरह विशिष्ठ अतिथि दक्षिण-पश्चिम जोन अध्यक्ष रमेशचंद्र झालवार, उपाध्यक्ष सरिता टांक, प्रवासी कुमावत क्षत्रिय समाज अध्यक्ष हरीश आसीवाल, मंडी अध्यक्ष माणक बबेरीवाल, कीर्तनिया समाज के महेंद्र कुमावत, कुमावत विकास संस्थान अध्यक्ष योगेश चौरमा, नवयुवक मंडल अध्यक्ष हितेश घीया, मातृशक्ति अध्यक्ष मोनिका कांकरवाल, राष्ट्रीय प्रतिनिधि मदनसिंह बाबरवाल, पन्नालाल इन्ठारा, जगदीश मामोडिया, भगवती खंडारिया, गिरधारीलाल कुमावत, गिरधारीलाल लाडणवा, श्यामलाल कुमावत, कमल कुमावत, दीपक नेहरा, सोनू कुमावत आदि का उपरना ओढ़ाकर सम्मान किया गया। कार्यक्रम मे डूंगरपुर सिंह बबेरीवाल, गोपाल कुमावत, हरिशंकर खंडारिया, दिलीप आसीवाल, दामोदर नराणिया, पुष्कर्राज सिन्ह सहित गणमान्य समाजजनों ने भाग लिया।

कृषि वैज्ञानिक पद्मश्री डा. सुंडाराम कुमावत का अभिनंदन

महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय सहित विभिन्न संस्थाओं के अधिकारियों से किया संवाद

उदयपुर। महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति कार्यालय में डा. सुंडाराम कुमावत का वाइस चांसलर डा. एन. एस. राठौड; सीटीआई कालेज डीन डा. पी.के. सिंह आदि ने अभिनंदन किया। इस दौरान कृषि क्षेत्र में नवाचारों पर चर्चा भी की।

नगर निगम महापौर गोविंद सिंह टांक के निवास पर भी भारतीय कुमावत क्षत्रिय महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष युधिष्ठर कुमावत, प्रवासी कुमावत क्षत्रिय समाज अध्यक्ष हरीश आसीवाल, सचिव संदीप कुमावत ने स्वागत करते हुए सामाजिक कार्यों पर चर्चा की।

डा. सुंडाराम कुमावत ने यहां कालका माता क्षेत्र में स्थित रॉयल संस्थान का अवलोकन कर कृषि क्षेत्र में अध्ययनरत विद्यार्थियों से करियर पर चर्चा की। इस दौरान संस्थान निदेशक गिरधारीलाल कुमावत, दिलीप कुमावत, सहायक कृषि अधिकारी सोनू कुमावत, शंकरलाल कुमावत ने उनका अभिनंदन किया। इसी तरह धूलकोट क्षेत्र में सतीश कुमावत के निवास पर डा. सुंडाराम कुमावत का स्वागत किया गया।

भक्त प्रह्लाद और भगवान नृसिंह

नृसिंह अवतार, विष्णु भगवान के सब अवतारों में विशेष हैं। भक्त प्रह्लाद छोटी सी आयु में विष्णु भक्ति की पराकाष्ठा तक पहुंच गये थे। नृसिंह के प्राकटय का श्रेय भक्त प्रह्लाद को है। उनकी अनन्य विष्णु भक्ति के कारण उसके पिता हिरण्यकश्यपु ने उन पर अनेक अत्याचार किये : खाना बंद करा दिया, विष पिलाया, शूलों से प्रहार, हाथियों से कुचलवाया, पुरोहितों से कृत्या राक्षसी उत्पन्न कराई, पहाड़ की चोटी से नीचे फिकवाया, शम्बरासुर से अनेक प्रकार की माया का प्रयोग करवाया, अँधेरी कोठरियों में बंद करा दिया, आँधी में छोड़ दिया आदि परन्तु इनमें से किसी भी उपाय से वह अपने पुत्र का बाल बांका भी न कर सका।

प्रह्लाद जी को पढ़ने के लिये गुरु शुक्राचार्य के पास भेजा था। उनके पुत्र शण्ड और अर्मक प्रह्लाद जी को पढ़ाया करते थे। जब हिरण्यकश्यपु ने प्रह्लाद से कहा कि जो बात सबसे अच्छी लगती है, वो बताओ। तो प्रह्लाद जी कहते कि संसारिक माया में फंसे हुए व्यक्तियों को भगवान श्रीहरि की शरण ग्रहण कर लेनी चाहिए। पिता को लगा कि गुरुकुल में कुछ विष्णुभक्त वेश बदलकर रहते हैं, जिन्होंने इसे बहका दिया है। पिता ने कड़ी देखरेख में प्रह्लाद को शिक्षा देने का आदेश दिया। शिक्षा प्राप्त करके प्रह्लाद जी घर आये तो पिता ने पूछा कि क्या सीखा; तो प्रह्लाद जी ने नवधा भक्ति का वर्णन कर दिया–

श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम्।
अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम्।।

ब्रह्मा जी से वरदान पाकर वो स्वयं को ईश्वर समझने लगा था। वह भगवान विष्णु से अपने भाई हिरण्याक्ष की मृत्यु का बदला भी लेना चाहता था तो वह कैसे स्वीकार कर लेता कि उसका ही पुत्र विष्णुभक्त बन जाए! मारने के सब प्रयास विफल हो गये तो पुनः प्रह्लाद जी को शुक्राचार्य आश्रम में भेज दिया गया। परन्तु इस बार तो प्रह्लाद जी सब असुर बालकों को ही भगवान विष्णु की महिमा का वर्णन करने लगे। फिर पिता ने स्वयं ही अपने पुत्र को मारने का विचार किया।

शेष पृष्ठ 21 पर ....

गर्मी में सेहत के लिए रामबाण है 'सत्तू'

किसी जमाने में गर्मी के दिनों में ज्यादातर ठंडे पेय घरों में बनाया करते थे, लेकिन बदलते दौर की भागदौड़ ने दिनचर्या को काफी कुछ बाजार पर निर्भर कर दिया है। इसी वजह से आज बने-बनाए आसानी से उपलब्ध विभिन्न प्रकार के शीतल पेय बाजार में उपलब्ध हैं। परंतु ये शीतल पेय नुकसानदेह भी हो सकते हैं, इस बारे में ज्यादातर लोग ध्यान नहीं दे पाते। थोड़ी देर के लिए गला तर करने वाले कार्बोनेटेड कोल्डड्रिंक वैज्ञानिक तौर पर काफी नुकसानदेह साबित हो चुके हैं।

गर्मी का मौसम आते ही हम खुद को गर्म वातावरण से बचाने के लिए तमाम उपाय करते हैं। जैसे, हम ठंडी जगहों पर जाते हैं या फिर ऐसे आहारों का उपभोग करते हैं, जो हमारे शरीर को शीतलता प्रदान करते हैं। इस मौसम में अधिकतर लोग खुद को कूल रखने के लिए कोल्ड ड्रिंक्स का इस्तेमाल करते हैं। कोल्ड ड्रिंक्स के बजाय सत्तू अधिक फायदेमंद होता है। **प्राचीन भारतीय पेय पदार्थ सत्तू हमारी सेहत के लिए रामबाण होता है।** बुजुर्गों की माने तो एक समय था जब गर्मी के दिनों में चना सत्तू ही मुख्य आहार हुआ करता था। तीज-त्यौहार से लेकर शादी, बारात, धार्मिक व सामान्य यात्रा तक में लोग चना सत्तू के साथ ही यात्रा करते थे।

सत्तू क्या होता है?

सत्तू एक प्रकार का देशज व्यंजन है, जो भूने हुए जौ और चने को पीसकर बनाया जाता है। बिहार में यह काफी लोकप्रिय है और कई रूपों में प्रयुक्त किया जाता है। सामान्यतः यह चूर्ण के रूप में रहता है जिसे पानी में घोलकर या अन्य रूपों में खाया अथवा पीया जाता है। सत्तू के सूखे (चूर्ण) तथा घोल दोनों ही रूपों को 'सत्तू' कहते हैं। सत्तू दो प्रकार के होते हैं जिनमें से एक है चने (Black Gram) की सत्तू और दूसरा है जौ मिला सत्तू। सबसे पहले चने और जौ को बालू वाली भुनाई में भूना जाता है फिर इसे भूसी समेत पीसा जाता है। इसे छाना नहीं जाता और इसी वजह से यह फाइबर से भरपूर होता है।

शेष पृष्ठ 21 पर ....

निर्जला एकादशी का शुभ संदेश- बूंद बूंद पानी का महत्व

निर्जला एकादशी का व्रत ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को किया जाता है। हिन्दू धर्म में एकादशी व्रत का मात्र धार्मिक महत्व ही नहीं है, यह व्रत मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य के नज़रिए से भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। एकादशी का व्रत भगवान विष्णु की आराधना को समर्पित होता है। इस दिन लोग व्रत करके श्रद्धा और सामर्थ्य के अनुसार दान पुण्य करते हैं। पौराणिक मान्यता के अनुसार इस दिन विधिपूर्वक जल कलश का दान करने वालों को पूरे साल की एकादशियों का फल मिल जाता है। इस प्रकार जो इस पवित्र एकादशी का व्रत करता है, वह समस्त पापों से मुक्त हो जाता है।

एकादशी व्रत की पौराणिक कथा

महाभारतकाल में महर्षि वेदव्यास ने भीम को निर्जला एकादशी का महत्व बताया था। महर्षि वेदव्यास जब पांडवों को चारों पुरुषार्थ- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष देने वाले एकादशी व्रत का संकल्प करा रहे थे तब महाबली भीम ने निवेदन किया- हे! महर्षि आपने तो प्रति पक्ष एक दिन के उपवास की बात कही है, मैं तो एक दिन क्या एक समय भी भोजन के बगैर नहीं रह सकता। मेरे पेट में 'वृक' नाम की जो अग्नि है, उसे शांत रखने के लिए मुझे कई लोगों के बराबर और कई बार भोजन करना पड़ता है। तो क्या अपनी उस भूख के कारण मैं एकादशी जैसे पुण्यव्रत से वंचित रह जाऊंगा।

तब महर्षि वेदव्यास ने भीम की समस्या का समाधान करते हुए उनका मनोबल बढ़ाते हुए कहा-नहीं, कुंतीनंदन, धर्म की यही तो विशेषता है कि वह न केवल सबको धारण करता है बल्कि सभी के योग्य साधन व्रत-नियमों को भी बड़ी सहज और लचीली व्यवस्था में उपलब्ध करवाता है। अत: आप ज्येष्ठ मास की शुक्ल पक्ष की निर्जला नाम की एक ही एकादशी का व्रत करो। इससे तुम्हें वर्ष की समस्त एकादशियों के फल की प्राप्ति होगी। नि:संदेह तुम इस लोक में सुख, यश और प्राप्त कर मोक्ष लाभ प्राप्त करोगे।

शेष पृष्ठ 20 पर ....

4000 साल पहले भारत के लोग करते थे उच्च प्रोटीनयुक्त मल्टीग्रेन 'लड्डू' का सेवन

हड़प्पा स्थल बिजनौर, अनूपगढ़, राजस्थान में पुरातात्विक स्थल की खुदाई के समय सात 'लड्डू' (Laddu) मिले थे। यहां मिली सामग्री पर हुए एक नए वैज्ञानिक अनुसंधान के अनुसार, हड़प्पा के लोग लगभग 4,000 साल पहले उच्च प्रोटीन वाले 'लड्डू' (Laddoos) का सेवन किया करते थे। यह अध्ययन बीरबल साहनी इंस्टीट्यूट ऑफ पैलियोसाइंसेज (बीएसआईपी), लखनऊ और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI), नई दिल्ली द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था।

यह जानकारी विश्व प्रसिद्ध प्रकाशक एल्सेवियर द्वारा 'जर्नल ऑफ आर्कियोलॉजिकल साइंस: रिपोर्ट्स' में प्रकाशित की गई है। इसका अध्ययन इस ओर भी संकेत करता है कि ये 'लड्डू' विलुप्त सरस्वती नदी (Saraswati River) के तट का हिस्सा है।

ये सात समान बड़े आकार के भूरे रंग के 'लड्डू', बैलों की दो मूर्तियाँ एवं एक हाथ से पकड़े हुए तांबे की अदज (कुल्हाड़ी के समान एक उपकरण, लकड़ी काटने या आकार देने के लिए इस्तेमाल किया जाता है) की खुदाई करके निकाली गई है।

2017 में ASI द्वारा खुदाई की गई थी और वैज्ञानिक विश्लेषण के लिए पहले सोचा था कि घग्घर (तत्कालीन सरस्वती) के तट के पास खोदे गए इन लड्डुओं का गुप्त गतिविधियों से कुछ संबंध भी था। क्योंकि मूर्तियाँ और अदज भी आसपास में पाए गए थे।

हालांकि, बीएसआईपी के वैज्ञानिको को एक विश्लेषण से पता चला है कि 'लड्डू', जौ, गेहूं, चना और कुछ तिलहनों से बने हैं। इन लड्डूओं में अनाज और दालें थीं और मूंग दाल अधिक थी। चूंकि हड़प्पा के लोग कृषक हुआ करते थे, इसलिए इन 'लड्डू' की उच्च-प्रोटीन मल्टीग्रेन संरचना समझ में आती है।

सात खाद्य गेंदों के आस-पास मिली वस्तुओं की उपस्थिति यह दिखाती है कि इंसान इन सभी वस्तुओं को उनकी उपयोगिता और महत्व के कारण सम्मान देता था। लड्डू की पुरातात्विक खोज बैल और तांबे की मूर्तियों के साथ मिलकर यह दर्शाती है कि हड़प्पा के लोग इनका उपयोग पूजन करने के लिये करते थे। यहां यह उल्लेख करना समीचीन है कि उस काल मे भारत के अलावा अन्य जगह मांसाहार ही खाद्य सामग्री के रूप में उपयोग में लिया जाता था।

यह हमारे लिए गर्व की बात है कि तब हम भारतीय खानपान के विज्ञान में भी उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर थे।

श्री चन्द्र प्रकाश अजमेरा

20 जून, 1948 को टोंक में श्री गणेश लाल अजमेरा के यहाँ श्रीमती मूली देवी की कोख से जन्मे श्री चन्द्रप्रकाश बाल्यकाल से ही हंसमुख स्वभाव, मेहनती, धैर्यवान, सरल स्वभाव एवं संवेदनशील व्यक्तित्व के धनी थे। इनका बचपन भाई-बहनों व परिवार के साथ उल्लासपूर्वक व्यतीत हुआ। इन्होंने हायर सैकण्डरी तक की पढाई टोंक में की। इस दौरान पढ़ाई के साथ ही फुटबॉल, हॉकी आदि खेलों में कप्तान की भूमिका निभाते हुए विशिष्ट छाप छोडी। इसी दौरान इनके पिताजी कनिष्ठ अभियन्ता, पी.डब्ल्यू.डी. विभाग एवं बडे भ्राता श्री बी.एल. अजमेरा, अभियन्ता, सिंचाई विभाग, टोंक से बाहर कार्यरत रहते थे तब श्री चन्द्रप्रकाश जी घर के विभिन्न कार्यों को जिम्मेदारी से सम्पन्न करते थे।

इन्होंने कोटा पोलीटेकनिक कॉलेज से मेकेनिकल इंजिनियरिंग में डिप्लोमा किया। अध्ययन के दौरान एकेडमिक दक्षता के साथ सांस्कृतिक योग्यता एवं नेतृत्व क्षमता का विकास किया।

वर्ष 1979 में श्री अजमेरा राजस्थान रोडवेज में कनिष्ठ अभियन्ता के पद पर नियुक्त हुए। सेवाकाल के दौरान अपने साथियों को उनके अधिकार दिलाने हेतु डिप्लोमा इन्जिनीयर्स एसोसिएशन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई एवं सेवानिवृत्ति के उपरान्त भी सक्रिय रूप से संगठन से जुडे रहे। श्री चन्द्रप्रकाश जी अपने संघर्षपूर्ण सेवाकाल के साथ ही साथ समाज सेवा के कार्यों में भी सक्रिय रहे।

ये लम्बे समय तक कुमावत क्षत्रिय महासभा जयपुर, सामुहिक विवाह समिति, कुमावत क्षत्रिय पत्रिका से जुड कर समाज अपनी सेवाऐं दीं। वर्ष 1996 में कुमावत क्षत्रिय विकास समिति मालवीय नगर के गठन में श्री लालचन्द अनावडिया, श्री गोविन्द सिंह खोवाल, श्री रामलाल मारवाल एवं श्री लक्ष्मीनारायण घोडीवाल के साथ अहम भूमिका निभाई एवं समिति में 1996 से 2013 तक कोषाध्यक्ष पद पर अपनी सेवाएं देते हुए समिति के सदस्यों से निरन्तर व्यक्तिगत सम्पर्क बनाए रखा। समिति की विभिन्न गतिविधियों यथा-जनगणना कार्य, परिचय पत्रिका प्रकाशन, रामनवमी समारोह, नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविरों, सामूहिक गोठ, सांस्कृतिक कार्यक्रमों आदि के आयोजन में प्रमुख भूमिका निभाकर सफलतापूर्वक सम्पन्न कराया। **कुमावत क्षत्रिय समाज विकास समिति मालवीय नगर को भवन हेतु भूमि आवंटन करवाने में इनकी प्रतिबद्धता एवं अग्रणी भूमिका सभी को याद रहेगी।** भूमि आवंटन के पश्चात भवन निर्माण हेतु अन्य पदाधिकारियों के साथ व्यापक जन सम्पर्क कर लाखों रुपये का सहयोग प्राप्त किया। जिसके फलस्वरूप भवन निर्माण प्रारम्भ हुआ एवं अनवरत चलता रहा। वर्ष 2013 के पश्चात आप समिति में किसी पद पर आसीन नहीं रहे अपितु युवाओं को प्रोत्साहित करते हुए समिति को अपना मार्गदर्शन देते रहे। वर्ष 2019 में भवन के बेसमेंट की फिनिशिंग हेतु समाजजनों से सहयोग लाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

साथी श्री सोहन लाल अजमेरा, श्री गोपाल लाल अजमेरा एवं स्व. श्री गोपाल आर. अजमेरा के साथ समूचे प्रदेश का भ्रमण कर 'अजमेरा' गोत्र के कुमावत परिवारों से सम्पर्क स्थापित कर अजमेरा परिवारों की जनगणना की तथा वर्ष 2014 में 385 परिवारों की एक परिचय पत्रिका का प्रकाशन करवाया जो बड़ी उपलब्धि थी। श्री चन्द्रप्रकाश जी समाज की '**कुमावत इंडिया**' पत्रिका से प्रारम्भ से ही जुड़ गए थे तथा व्यवस्था मण्डल में रहते हुए पत्रिका के संचालन, वितरण, सदस्य बनाने आदि कार्यों में दिए गए सहयोग को 'कुमावत इंडिया' पत्रिका परिवार कभी भुला नहीं सकता।

वर्ष 1994-95 में कुमावत विकास समिति, टोंक के गठन हेतु प्रेरित किया तथा टोंक में विकास समिति का गठन हुआ इससे टोंक कुमावत समाज में एक नई चेतना का संचार हुआ है।

श्री चन्द्रप्रकाश जी एक कर्मठ एवं कर्मशील व्यक्ति थे। राजस्थान रोड़वेज से सेवानिवृत्त होने के पश्चात ये समाज सेवा में व्यस्त रहने के दौरान ही वर्ष 2009 में कृषि विभाग की संस्था आई.एच.आई.टी.सी. (इण्डियन होर्टीकल्चर इन्स्टीट्यूट एण्ड ट्रेनिंग सेन्टर) के गठन से अपने जीवन के अन्तिम दिवस तक बहुत ही निपुणता से कार्य करते रहे। 21 अप्रेल, 2022 को आपके निधन से समाज ने एक अच्छा समाजसेवी सदा के लिए खो दिया। इनके पुत्र गौरव अजमेरा, पुत्री श्रीमती उर्वशी बालोदिया, अनेक रिश्तेदारों ने भी इन्हें भावभीनी व अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित की।

हम जब भी उनसे मिले पाया कि उनका 90 प्रतिशत समय समाज के चिन्तन में ही बीतता था।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका एवं कुमावत क्षत्रिय समाज विकास समिति, मालवीय नगर, जयपुर की ओर से श्रद्धेय श्री चन्द्रप्रकाश जी अजमेरा को सादर श्रद्धांजलि। ये हमारे स्मृति पटल पर सदैव रहेंगे, इनसे प्रेरित होकर हम कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ते रहेंगे।

राजस्थान सरकार की महत्वपूर्ण योजनायें

1. ऐसी महिला जिनकी आयु 55 वर्ष या जन्म तारीख 01.01.1965 अथवा इससे अधिक है तथा पुरूष जिनकी आयु 58 वर्ष या जन्म तारीख 01.01.1962 या इससे अधिक है वो ई-मित्र पर जनआधार कार्ड ले जाकर अपना पेंशन आवेदन करके राज्य सरकार से प्रति माह रु. 750 पेंशन ले सकते।
2. जो समाज की महिला विधवा है वो अपने पति का मृत्यु प्रमाण-पत्र और जन आधार कार्ड को ई-मित्र पर ले जाकर पेंशन के लिए आवेदन कर सकते है ।
3. जिस किसी के पेंशन आ रही है वो अपने भामाशाह कार्ड में अपनी सही आयु दर्ज करावे ताकि उनकी पेंशन में नियमानुसार बढ़ोतरी होती रहे, 75 साल से ऊपर वृद्ध को 1000 रुपये 60 साल से ऊपर विधवा को 1000 रुपये ओर 75 साल से ऊपर विधवा को 1500 रुपये प्रति माह मिलेंगे ।
4. किसी भी प्रकार से विकलांग है वो बन्धु ई-मित्र पर जाकर अपना विकलांग पंजीकरण करावे ताकि उसका विकलांग प्रमाण-पत्र बन सकता है और पेंशन के लिए आवेदन कर सकते है ।
5. पेंशन लेने वाली विधवा महिला, नाता जाने वाली माँ के बच्चे और विकलांग महिला पुरुष के बच्चे अगर स्कूल जाते है तो उसके बच्चों को पालने के लिए सरकार 0 से 5 साल तक 500 रुपये ओर 6 से 18 साल तक के बच्चों को 1000 रुपये हर माह मिलते है। **पालनहार योजना**
6. किसी भी महिला या पुरुष के नाम से कही पर भी जमीन है तो वो ई-मित्र पर बैंक, भामाशाह और जमीन के दस्तावेज ले जाकर **प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना** के तहत आवेदन करवा कर हर साल किस्तो में 6000 रुपये ले सकता है।
7. किसी भी योग्य राशन कार्ड के धारक को 2 रुपये किलो वाले सरकारी गेंहू नही मिलते है तो वो ई मित्र पर जाकर खाद्य सुरक्षा फॉर्म भरा सकते है जिनके पेंशन आती है उनके जल्दी गेहू शुरू हो जाते है। (विकलांग पेंशन,विधवा,)
8. अल्पकालीन ऋण आवेदनकिसान जमीन पर सोसायटी से अल्पकालीन ऋण आवेदन भी कर सकता है ।
9. मजदूर वर्ग के लोग श्रम हिताधिकारी कार्ड (श्रमिक कार्ड) बनवा कर रखे उनको उसमें **'हिताधिकारी कार्ड'** की कई प्रकार की योजनाओं जैसे शुभ शक्ति योजना, छात्रवृति योजना, प्रसूति सहायता और हिताधिकारी कि असामयिक मृत्यु होने पर मृत्युदावा के अलावा बहुत से फायदे ले सकते है।
10. विधवा और BPL महिला या पुरुष अपने दो बेटी की शादी के लिए **'सहयोग योजना'** के तहत आवेदन करके सरकारी लाभ ले सकते है ।
11. 75% से अधिक अच्छे अंक प्राप्त करने वाली **बालिका गार्गी पुरुस्कार और स्कूटी योजना** की पात्र है। अत: इस योजना का लाभ लेने के लिए फॉर्म भर सकती है ।
12. बच्चों के लिए आवश्यक दस्तावेज जैसे जन्म प्रमाण-पत्र, आधार कार्ड, OBC प्रमाण पत्र, मूल निवास, आय प्रमाण पत्र आदि समय पर बनाते रहे।
13. **मतदाता कार्ड :** बच्चों के 18 वर्ष पूर्ण होने पर BLO के पास निर्धारित दस्तावेज जमा करवा कर मतदान कार्ड बनावे। जिससे बच्चे अपने मताधिकार का प्रयोग कर सके ।
14. **मुख्यमंत्री आवास योजना :** गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले परिवार योजना का लाभ लेने के लिए अपना नाम मुख्यमंत्री आवास योजना में जुड़वाए।
15. **वृद्धावस्था पेंशन :** पेंशन की राशि समय समय पर खाते से निकालते रहे। पेंशन धारक की मृत्यु हो जाने पर उसके खाते में जमा हुई पेंशन वापिस सरकार में जमा करवानी पड़ती है, वो पैसा कोई दूसरा नही उठा सकता। अगर कोई उसे उठाता है तो भविष्य में ब्याज सहित वापिस जमा करवाना पड़ता है।
16. **एटीएम** धारक अपने एटीएम से नियमित अंतराल में ट्रांसेक्शन करता रहे ताकि उसमें दुर्घटना बीमा होता है, दुर्घटना के समय क्लेम करने के लिए यह जरूरी होता है ।
17. बैंक खाताधारक अपने खाते में **प्रधानमंत्री दुर्घटना बीमा योजना** का फॉर्म भर करके दे और 12 रुपये, 330 रुपये तथा 500 रुपये प्रति वर्ष देकर एक अच्छा दुर्घटना बीमा ले सकते है।
18. **सुकन्या समृद्धि योजना :** जिनकी बेटियों का जन्म 2010 या उसके बाद में हुआ है वो अपने बेटियों के लिए सुकन्या समृद्धि योजना में खाता खुलवा कर एक तय राशि प्रति माह जमा करवा सकते है। इसमें 14 वर्ष तक राशि जमा कराये तथा इसमें जमा राशि 21 वर्ष बाद मिलेंगी जो लड़की के काम आयेगी।
19. **म्यूच्यूअल फंड** में इन्वेस्टमेंट करने के इच्छुक SBI ओर अन्य बैंकों से SIP (स्माल इन्वेस्टमेंट प्लान) ले सकते है इसकी जानकारी अपनी बैंक ब्रांच में जाकर ले सकते है ।

खुशबू कारवाल विज्ञान संकाय में प्रथम

सांवेर। 12वीं कक्षा की जीव विज्ञान की छात्रा खुशबू नेमीचन्द कारवाल, केसरीपुरा ने विज्ञान संकाय में 90 प्रतिशत अंक प्राप्त कर स्कूल में प्रथम स्थान अर्जित किया। खुशबू को 'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से बधाई।

लाउडस्पीकर बना राजनैतिक टूल

शादियों-पार्टियों में म्यूजिक की गूंज, मंदिरों से भजनों की मधुर धुन-आरती की गूंज, मस्जिदों से अजान तथा राजनैतिक रैलियों व भाषणों में लाउस्पीकर आवश्यक वस्तु बना रहा। 1876 में ग्राहम बेल द्वारा लाउस्पीकर का आविष्कार ध्वनि प्रसारण के लिए हुआ। आज वही लाउस्पीकर भारत में ''पॉलिटिकल टूल'' बन गया।

इसके उपयोग व नियंत्रण के लिए ध्वनि प्रदूषण (विनियमन और नियंत्रण) नियम 2000 बना हुआ है तथा 13 अगस्त, 2002 के सरकार ने परिपत्र जारी कर इनकी पालना न कने पर पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम के अनुसार दण्डात्मक कार्यवाही करने को कहा था। माननीय उच्चतम न्यायाल ने 18 जुलाई 2005 व 28 अक्टूबर 2005 को निर्णय देते हुए कहा कि लाउडस्पीकर का उपयोग अनुमति के बाद ही किया जाना चाहिये। लाउडस्पीकर का प्रयोग एक अनुमत सीमा तक की ध्वनि के लिए ही किया जा सकता है। यह सीमा औद्योगिक क्षेत्रों के लिए 75 डेसिमल (रात 70 डेसिमल), वाणिज्यिक क्षेत्रों के लिए 65 डेसिमल (रात 55 डेसिमल), रिहायशी इलाकों केलिए 55 डेसिमल (रात 45 डेसिमल), साइलेंस जोन में 50 डेसिमल (रात 40 डेसिमल) निर्धारित है।

हालिया विवाद लाउडसपीकर पर अजान व नमाज की प्रतिक्रिया में मस्जिदों के सामने **'हनुमान चालीसा'** पाठ से उत्पन्न हुआ है। कुछ सेलिब्रेटिज ने भी यह मुददा उठाया था तथा कहा कि अजान से हुए ध्वनि प्रदूषण से उनकी नींद में व्यवधान होता है। यह सही है कि ध्वनि प्रदूषण से स्वास्थ्य खराब हो सकता है, सभी को शांति से जीने का अधिकार है। उधर महाराष्ट्र में राज ठाकरे ने लाउस्पीकर को राजनैतिक टूल बना कर घोषणा की कि लाउस्पीकर पर अजान/नमाज विरोध में महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) के कार्यकर्ता मस्जिदों के सामने दुगनी आवाज में हनुमान चालिसा पढ़ेंगे। इसी प्रकार सांसद नवनीत राणा व उसके एमएलए पति ने उधव ठाकरे के निवास के बाहर हनुमान चालिसा पढ़ने की घोषणा ने राजनीति में बवाल ला दिया।

दूसरी ओर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ ने राज्य के सभी धार्मिक स्थलों से लाउस्पीकर हटाने तथा उनकी ध्वनि परिसर के बाहर नहीं आने के आदेश जारी किये। इसके साथ ही यू.पी. में इसका शांति से पालना हुई और मंदिरों व मस्जिदों से लाउडस्पीकर हटा लिए गए। यूपी सरकार के इस कदम की सभी बुद्धिजीवियों ने प्रशंसा की। वहीं नितिश सरकार बिहार के धार्मिक स्थलों से लाउडस्पीकर हटाने के पक्ष में नहीं है। मुस्लिम नेता लाउस्पीकर हटाने या आवाज कम करने के पक्ष में नहीं हैं। राजनेताओं एवं धार्मिक नेताओं के विरोधाभाषी बयान इस समस्या को गलत दिशा में ले जा सकते हैं। **इसके लिए एक मार्गदर्शिका केन्द्र सरकार से जारी किया जाना अथवा न्यायिक विनिश्चय किया जाकर एकरूपता लाया जाना उचित होगा।** फिर उसकी पालना नहीं करने पर बिना धार्मिक भेदभाव के उपयोगकर्ताओं पर दण्डात्मक कार्यवाही करनी चाहिए। ताकी लाउस्पीकरों की कानफोडू ध्वनि से आमजन को राहत मिल सके।

निर्जला एकादशी का शुभ संदेश **.... पृष्ठ 17 से आगे**

महर्षि वेदव्यास के आश्वासन पर वृकोदर भीमसेन भी इस एकादशी का विधिवत व्रत करने के लिए सहमत हो गए, इसलिए वर्ष भर की एकादशियों का पुण्य लाभ देने वाली इस श्रेष्ठ निर्जला एकादशी को लोक में पांडव एकादशी या भीमसेनी एकादशी के नाम से भी जाना जाता है। मान्यता है कि इस दिन जो स्वयं निर्जल रहकर ब्राह्मण या जरूरतमंद व्यक्ति को शुद्ध पानी से भरा हुआ घड़ा दान करता है। उसे जीवन में कभी भी किसी प्रकार की कमी नहीं होती। उसके जीवन में सदैव सुख-समृद्धि बनी रहती है।

निर्जला यानि यह व्रत बिना जल ग्रहण किए और उपवास रखकर किया जाता है। इसलिए यह व्रत कठिन तप और साधना के समान महत्व रखता है। सिर्फ निर्जला एकादशी का व्रत कर लेने से वर्षभर की एकादशी व्रत का फल मिलता है। जहाँ साल भर की अन्य एकादशी व्रत में आहार संयम का महत्व है वहीं निर्जला एकादशी के दिन आहार के साथ ही जल का संयम भी ज़रूरी है। इस व्रत में जल ग्रहण नहीं किया जाता है यानि निर्जल रहकर व्रत का पालन किया जाता है। यह व्रत मन को संयम सिखाता है और शरीर को नई ऊर्जा देता है। यह व्रत पुरुष और महिलाओं दोनों द्वारा किया जा सकता है।

यह व्रत हमें जल संरक्षण का संदेश देता है। इस दिन जल ग्रहण नहीं किया जाता है। प्रतीकात्मक रूप से यह संदेश है कि जल बचाया जाए, ग्रहण तब ही करें जब संग्रहण और संरक्षण कर सकते हैं। हमारी संस्कृति में जल को वरूण देवता माना गया है। भीषण गर्मी में बिना पानी के रहने का यह व्रत बताता है कि पानी की हर बूंद का महत्व क्या है? भगवान शिव ने कहा है- मैं स्वयं जल हूं। अत: जल की सुरक्षा के इस शुभ पर्व पर हमें भी अपनी जिम्मेदारी समझनी चाहिए।

- **सोनम कुमावत,** बरकत नगर, जयपुर

भक्त प्रह्लाद और भगवान नृसिंह .... पृष्ठ 16 से आगे

प्रह्लाद से पूछा कि तेरा विष्णु कहाँ रहता है? कहा कि 'पिताजी! आपने प्रश्न ही गलत पूछा है। यह पूछिये कि वो कहाँ नहीं रहते? वो तो सर्वत्र हैं। मुझमें, आपमें, जड़ में, चेतन में, खड़ में, खम्ब में सब जगह वही तो हैं। हिरण्यकश्यपु ने खम्बे पर गदा से प्रहार किया तो भगवान् नृसिंह प्रकट हो गये। उसे उठाकर दरवाजे पर ले जाके अपनी जांघों के ऊपर गिरा लिया और खेल खेल में अपने नखों से उसका वक्ष फाड़ डाला। भगवान नृसिंह के क्रोध से तीनों लोकों में हाहाकार मच गया, स्वर्ग डगमगा गया, उनके पैरों की धमक से भूकम्प आ गया, वेग से पर्वत उड़ने लगे और तेज की चकाचौंध से आकाश तथा दिशाओं का दिखना बंद हो गया। ब्रह्माजी, शंकरजी, इंद्र आदि देवता, ऋषि, पितृ, सिद्ध, विद्याधर, महानाग, मनु, प्रजापति, गंधर्व, चारण, यक्ष, किम्पुरुष, वेताल, किन्नर आदि ने स्तुतियों द्वारा भगवान् को मनाने का प्रयास किया, किंतु कोई भगवान को शांत नहीं कर पाया। फिर बालक प्रह्लाद ने भागवत के सप्तम स्कन्ध के नवमोऽध्याय: में 43 श्लोकों में भगवान् नृसिंह की बहुत सुंदर स्तुति की।

प्रह्लाद जी कहते, 'ब्रह्मा आदि देवता भी आपको संतुष्ट नहीं कर सके तो मैं असुर बालक आपको कैसे संतुष्ट कर सकता हूँ? परन्तु भक्ति से तो भगवान गजेंद्र पर भी संतुष्ट हो गये थे।' वे कहते, 'भगवन! आपका मुख बड़ा भयावना है। आपकी जीभ लपलपा रही है। आँखें सूर्य के समान, भौहें चढ़ी हुईं, पैनी दाढ़ें, गले में आँतों की माला, खून से लथपथ गर्दन के बाल आदि देखकर भी मैं नहीं डरा। लेकिन मैं डरता हूँ संसारचक्र में पिसने से।'

प्रह्लाद जी ने इतनी सुंदर स्तुति की थी, कि ब्रह्मा भी उसे सुनकर शर्मसार हो जाए। भगवान् कैसे प्रसन्न न होते? अपने भक्त की रक्षा के लिये तो उन्होंने अवतार ग्रहण किया था। भगवान ने भक्त को गोद में ले लिया और प्रभु अपने भक्त को चाटने भी लगे। मानो मैया और गैया बनके आये हैं भगवान भक्त के लिये। भगवान् ने प्रह्लाद से कुछ मांगने को कहा तो प्रह्लाद जी ने कहा कि यदि देना ही है तो वर दीजिये कि मेरे हृदय में कभी कामना का बीज ही अंकुरित न हो और मेरे पिता शुद्ध हो जाएं। भगवान् कहते, 'तुम केवल पिता की बात करते हो! तुम अपनी 21पीढ़ियों को ही तार चुके हो।' और भगवान् ने यह वचन भी दिया था कि प्रह्लाद के कुल के किसी भी असुर का वध नहीं करेंगे।

धन्य हैं भक्त प्रह्लाद! धन्य हैं उन्हें गर्भ में ही ज्ञान देने वाले नारद जी! हमें संकल्पबद्ध होना है कि अपने बच्चों को भी धर्म और संस्कृति की सेवा करने की प्रेरणा अवश्य देंगे। गर्भवती स्त्री को तो भगवान् की कथाओं का श्रवण, अध्ययन अधिक से अधिक करना चाहिये। भगवान् नृसिंह से प्रार्थना कीजिये कि जिस प्रकार आपने हर विकट परिस्थिति में अपने भक्त प्रह्लाद की रक्षा की, उसी प्रकार हमारे जीवन में आने वाली हर विपदा से और हमारे भीतर के इन काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सरता आदि से हमारी रक्षा कीजिये और आपकी अनन्य भक्ति की प्राप्ति हमें भी हो।

गर्मी में सेहत के लिए रामबाण है 'सत्तू'... पृष्ठ 16 से आगे

सत्तू खाने के कई तरीके हैं। पारंपरिक तरीके की बात करें तो इसे मीठे या नमकीन शरबत के रूप में पी सकते हैं। इसके लिए एक गिलास पानी में दो चम्मच सत्तू, नमक या चीनी, नींबू का रस और भूना जीरा पाउडर मिलाकर मिक्स कर लें। यह हमें गर्मी में लू एवं डिहाइड्रेशन जैसी समस्याओं से बचाता है। सत्तू को लिट्टी और पराठे के रूप में भी खाया जाता है।

देसी प्रोटीन ड्रिंक के रूप में मशहूर सत्तू का प्रयोग गर्मी के मौसम में खूब किया जाता है। यह गर्मी (Summer) के दिनों में सुपर कूल तो रखता ही है, दिनभर भरपूर एनर्जी भी बनाए रखता है। इसे खाने से शरीर को ठंडक मिलती है और गर्मी के मौसम में प्यास बुझाने में भी यह काफी काम आता है। इसके बेहतरीन स्वाद और कई गुणों को देखते हुए आज यह देश ही नहीं, दुनिया के कई हिस्सों में लोकप्रिय होता जा रहा है। चने के सत्तू में फाइबर्स और कार्बोहाइड्रेट्स की पर्याप्त मात्रा होती है।

सत्तू में फाइबर, आयरन, मैंगनीज, प्रोटीन, मैग्नीशियम और लो सोडियम भरपूर मात्रा में पाया जाता है। यह शरीर को गर्मी में शीतलता प्रदान करता है और दिनभर एनर्जी देता है। जिस वजह से इसे प्रोटीन ड्रिंक और एनर्जी ड्रिंक के रूप में भी पिया जाता है। यह आंतों को हेल्दी रखने के लिए भी कारगर होता है।

गांव की गलियों से फाइव स्टार होटलों की शान बनी सतुई लस्सी

फास्ट फूड और कोल्ड ड्रिंक्स के बढ़ते प्रचलन के बावजूद लोगों के लिए 'दिव्य पेय' के तौर पर अपनी पहचान बनाने वाली 'सतुई लस्सी' गांवों की गली-चौपाल से निकल कर आज पांच सितारा होटलों और नामी गिरामी रेस्टोरेंट की शान बन चुकी है।

पूर्वांचल और बिहार वासियों के लिए दशकों से सतुई लस्सी सबसे पसंदीदा पेय पदार्थ है लेकिन अब महानगरों मुम्बई, दिल्ली और बैंगलोर जैसे शहरों में औषधीय गुणों से युक्त इस पेय पदार्थ की मांग बढ़ती जा रही है। यह सतुई लस्सी धीरे-धीरे सामान्य रेस्टोरेंट्स से पांच सितारा होटल व रेस्टोरेंट्स तक अपनी पहुंच बना चुकी है। अतिथियों व ग्राहकों द्वारा सतुई लस्सी की मांग के कारण होटल की रसोई में अब यह मेन्यू में भी शामिल हो गया है।

अगर आप भी गर्मियों के लिए हेल्दी फूड की तलाश में हैं, तो आप सत्तू (Sattu) को अपनी डाइट में शामिल कर सकते हैं। - **राकेश कुमावत,** एडवोकेट बरकत नगर, जयपुर

ब्रह्माण्ड और हमारा पिण्ड शरीर

जो ब्रह्माण्ड में है वह सब हमारे पिण्ड शरीर में भी है। चौबीस अंक्षाश है, शरीर में चौबीस पसलिया हैं हम सब ईश्वर के अंश हैं उनके व हमारे अस्तित्व में कुछ भी भेद नहीं है। परमात्मा सर्वत्र प्रकाशमान परिपूर्ण है, ईश्वर वह शक्ति है ऊर्जा है जो आत्मा के रूप में समुचे ब्रह्माण्ड में विद्यमान है यह दिव्य सदृश्य शक्ति विराट ब्रह्माण्ड को स्वचालित करती है जो प्रत्येक पदार्थ में परिवर्तन की तीन अवस्था सृजन, स्थिति, विनाश इस विराट ब्रह्माण्ड की स्वचालित तन्त्र की अनिवार्य अवस्था है। इस दिव्य अगोचर नियामक सत्ता का अस्तित्व ईश्वर है। इसमें अनन्त दस दिशाएं पूर्व, पश्चिम, उत्तर,दक्षिण, ईशान, आग्नेय, वायव्य, नैऋत्व्य, आकाश, पाताल जो अनन्त है।

इस ब्रह्माण्ड में धर्मग्रन्थों में कुबेर के खजाने का नाम निधि है जिसमें नौ प्रकार की विधि निधियां है। पहली **पदमानिधि :** इस निधि से सम्पन्न व्यक्ति सात्विक गुण युक्त होता है। सात्विक कमाई गई सम्पदा से कई पीढ़ियों तक धन धान्य की कमी नहीं रहती। उदारता से दान देता है। **(2) महापदमनिधि :** यह निधि भी सात्विक है इसका प्रभाव सात पीढ़ियों के बाद नहीं रहता यह व्यक्ति दानी होता है सुख ऐश्वर्य भोगता है। (3) **नील निधि :** यह सत, रज दोनों गुणों से मिश्रित होती है। व्यापार द्वारा ही प्राप्त होती है इसका प्रभा तीन पीढ़ियों तक ही रहता है। चौथी **(4) मुकंद निधि :** इसमें रजोगुण की प्रधानता रहती है इससे सम्पन्न व्यक्ति भोगादि में लगा रहता है एक पीढ़ी के बाद खत्म हो जाती है। (5) **नन्द निधि :** इसमें रज और तम गुणों का मिश्रण होता है। व्यक्ति लम्बी आयु और निरन्तर तरक्की प्रदान करती है। अपनी तारीफ से खुश होता है। (6) **मगर निधि :** यह तामसी होती है इससे सम्पन्न व्यक्ति अस्त्र-शस्त्र को संग्रह करने वाला राजशासन में दखल रखने व शत्रुओं पर भारी पड़ता है। अस्त्र शस्त्र से या दुर्घटना से मृत्यु होती है। (7) **कच्छप निधि :** इसमें व्यक्ति अपनी सम्पत्ति को छुपाकर रखता है न स्वयं उसका उपयोग करता है न करने देता है उसकी रक्षा करता है। (8) **शंख निधि :** को प्राप्त व्यक्ति स्वयं की चिंता खुद के ही भोग की इच्छा करता है उसका परिवार गरीबी में जीवन गुजारता है। (9) **खवं निधि :** इस निधि में सम्पन्न व्यक्ति उपरोक्त आठ का सम्मिश्रण होता है मिश्रित स्वभाव का होता है इसके स्वभाव व कार्यों के बारे में भविष्य वाणी नहीं की जा सकती व्यक्ति घमण्डी या विकलांग होता है मौका मिलने पर किसी का भी धन सुख छीन सकता है।

(14) चोदह भुवन : पुराणों के अनुसार भुवन की संख्या 14 है सात ऊर्ध्व लोक सात अधो लोक हमारी पृथ्वी भू लोक है। (2) भुव : लोक पृथ्वी से लेकर सूर्य लोक तक अन्तरिक्ष क्षेत्र में भुवः लोक है। (3) मह लोकः यह ध्रुव लोक से एक करोड़ योजन दूर है यहां भृग आदि सिद्धगण निवास करते हैं। भुवः लोक में अन्तरिक्ष वासी देवता निवास करते हैं। (4) स्वः लोक यह सूर्य से लेकर ध्रुवमण्डल तक का क्षेत्र है उसमें इन्द्र आदि स्वर्गवासी देवता निवास करते हैं। (5) जनः लोक : इसमें सनाकादिक ऋषि निवास करते हैं। तपः लोक (6) यहां बैराज नाम के देवता निवास करते हैं। (7) सत्य लोक : इस लोक में ब्रह्मा निवास करते हैं। उसी तरह अधोलोक में सात पाताल लोक हैं (1) अतल लोक यह पृथ्वी से दस हजार योजन गहराई पर है भूमि सफेद है। (2) वितल लोक इसकी भूमि काली है (3) सुतल लोक इसकी भूमि अरुण प्रातःकालीन सूर्य के रंग जैसी (4) तलातल लोक : यह सुतल से दस हजार योजन नीचे है। यह पीत पीपली भूमि का है। (5) महातल लोक : यह तलातल से नीचे है इसकी भूमि कंकरीली है। (6) रसातल लोक : यह महातल से दस हजार योजन नीचे है इसकी भूमि पथरीली है। (7) पाताल लोक : यह रसातल से नीचे है इसकी भूमि सुवर्णमयी है। इन सात अद्योलोकों में देत्य, दानव, नागनिवास करते हैं।

मानव स्थूल शरीर में पांच ज्ञानेन्द्रिया श्रवण, त्वचा, नेत्र, नाक, जीभ (जो विषय का ज्ञान कराती है) पांच कर्मेन्द्रिया वाक, पाणि, पाद गुदा, उपस्थ जिनका कर्मों और झुकाव रहता है। चार अन्तकरण मन बुद्धि चित, अहंकार जो इस चिन्तन में लगे रहते हैं। इन चौहद इन्द्रियों इसी प्रकार ब्रह्माण्ड में चौदह भुवन सत्, तपो, जनः, मह, ध्रुव, सिद्ध, पृथ्वी, अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल, पाताल है। इन में एकाक्षर ब्रह्म ॐ ओम है यह ईश्वर का वाचक बोधक शब्द प्रणव ओइम ॐ है। त्र्यक्षरमय अ उ म अमृत, उतम, मंगलकारी है। इन तीनों अक्षरों में त्रिगुणमयी प्रकृति तमस, रजस, सत्व, (1) सत्व विरल गैशियस सन्तुलन पवित्रता, स्थैत्व और ज्ञान का जन्म देता है। (2) रजस : तरल लिक्विड गति का तत्व है क्रियाशील चत्रैलय और काम की उत्पत्ति करता है। (3) तमस : घन, ठोस, सालिड, जड़ता का तत्व है। भ्रम, निष्क्रयता, प्रमाद को उत्पन्न करता है निम्न स्तर पर ले जाता है। समस्त मानव स्वभाव इन्हीं तीन गुणों से बनते हैं। यही विश्व के आधारभूत उपादान हैं प्रकृति तीन गुणों स्थूल सूक्ष्म और कारण तीनों जगत सहित सर्वशक्तिमान परमेश्वर उनके अधिष्ठाता विराट रूप से अथव सृष्टि उत्पत्ति स्थिति ओर प्रजय उपेक्षा से ब्रह्मा, विष्णु और महेश रूप से विद्यमान हैं। प्रणव ॐ ही ईश्वर है। प्रवण का स्वरूप जहां कोई कार्य है वहां अवश्य ही कम्पन्न होगा जहां कम्पन्न होगा वहां अवश्य ही कोई शब्द होगा सृष्टि के आदि कारण रूप की ध्वनि ही ओइम ॐ है। यह अक्षतः अमृत और अभय है। भूत, वर्तमान भविष्य सब ओइम की व्याख्या है तीनों कालों से ऊपर है ॐ का ध्यान का अर्थ है एकाग्रता चेतना को सब तरफ से

समेट कर एक ही बिन्दू पर केन्द्रित कर देना दृढ़तापूर्वक जमें रहना ध्यान एकाग्रता है। ॐ का ध्यान मनन करने पर षड़विकार काम, क्रोध, मोह, लोभ, मद, मात्यशर्य आदि मलों का नाश होकर पंचमहाभूत पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश पर अधिकार सत्ता प्राप्त हो जाती है। एकादश इन्द्रियां बस में हो जाती है एवं चतुष्ट पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है। धर्म कर्तव्य है, काम इच्छा है अर्थ जीवन को बनाये रखने का साधन है मोक्ष इन सबसे मुक्त हो जाना है। इस भावनामात्र से हमारे भीतर आनन्द और शक्ति का संचार होता है।

सूक्ष्म स्तरों में ओइम का उच्चारण हमारी सम्पूर्ण नियति को प्रभावित करता है, ब्राह्मण के सभी तत्वों पर अपना प्रभाव डालता है। अपने अन्तकरण मन, बुद्धि, चित व अहंकार को काम, क्रोध, मोह, लोभ, ईर्ष्या आदि विकार (मलों) से मुक्त और शुद्ध होते हैं। मानसिक स्तर सूक्ष्म स्तर है मन को एक प्रकार की स्थिति में नहीं रख पाते क्योंकि ये शरीर, मन, बुद्धि, तीन मूल प्रकृति शक्तियों (बात्, रज, तम) के आवरण में रहते हैं। मन शरीर की जड़ है। मन की शक्तियां अनन्त हैं मन प्राण को परमात्मा की सत्ता का बोध कराता है आज्ञा चक्र मन का स्थायी निवास है इसे सिद्ध करने पर मन ब्रह्मरन्ध्र की ओर अग्रसर होकर विराट चैतन्य में एकाकार होता है।

(7) सप्त व्याकृतियां : भू:, भुव, स्व:, मह:, जन, तप:, सत्यम् कही गई हैं इनमें भू:, भुव , स्व: तीन महाव्याहतियां जो गायत्री मन्त्र के आरम्भ में विशेष मानसिक रूप से जपी जाती हैं। गायत्री मंत्र को सावित्री मंत्र भी कहते हैं। गायत्री की महिमा अनन्त है, सावित्री ब्रह्म शक्ति है। गायत्री मन्त्र के देवता सविता है साधक उनकी मर्गज्योति का ध्यान करते हैं जो आज्ञा चक्र तक है। इस प्रकार मेरूदण्ड व मस्तिष्क से सूक्ष्म चक्रों पर मानसिक जप करते हुए आज्ञाचक्र और सहस्त्रार के मध्य ऊपर एक विराट ज्योति है जिस पर ध्यान किया जाता है।

गायत्री मंत्र (1) भू: मूलाधार चक्र (2) भुव: स्वाधिष्ठान चक्र (3) स्व: मणिपुरचक्र (4) मह: अनाहत चक्र (5) जन: विशुद्धि चक्र (6) तप: आज्ञा चक्र (7) ॐ सत्यम् सहस्त्रारचक्र जब चित में स्थिरता आती है तब प्रार्थना और जप किया जाता है। ॐ भू लोक भुव:-अन्तरिक्ष, स्व: स्वर्ग लोक मह: महलोक जन: जनलोक तप: तपोलोक,सत्यम् सत्यलोक तत्:, तेजस अग्निदेव सवितु सूर्य, वरेण्यम ब्रह्मा प्रजापति भर्ग-आप जल देवस्य इन्द्र धीमहि अन्तरात्मा, धियों-ब्रह्म भगवान सदा शिव न: अपने स्वरूप का, प्रचोदयात, प्रेरणादायी। इस साधना में यम नियमों का पालन व भक्ति अनिवार्य है। गायत्री मंत्र से बढ़कर कोई जप नहीं है। अन्तर्वाहय जगत : (1) स्थूल जगत (2) सूक्ष्म जगत- पृथ्वी लोक पर होने वाले जीव प्राणी जिनको हम देख सकते हैं स्थूल जगत में आते हैं। सूक्ष्म जगत हमें दिखाई नहीं देता जो अन्य लोक है जैसे नाग लोक यक्ष्य लोक इस सृष्टि में बहुत कुछ है जो हमारी कल्पना से परे हैं हमारे शरीर में भी एक सूक्ष्म देह है। सूक्ष्म जगत का रहस्य बाह्य जगत से अधिक है देवता, ऋषि, सिद्धि साध्य किनर, गंधर्व, पित्तर, पिशाच आदि सूक्ष्म जगत में रहते हुए अपने अपने अधिकार अनुसार स्थूल जगत पर शासन करते हैं। योग साधना से सूक्ष्म जगत के रहस्यों को जान सकते हैं।

अष्टधा प्रकृति : शरीर की आठ प्रकृति के जड़त तत्व हैं पांच स्थूल तत्व: क्षिति, जल, पावक, गगन और समीर तीन दिव्य तत्व मन, बुद्धि और अंहकार हमारे स्वयं के दो रूप होते हैं एक स्थूल शरीर रूप स्थूल तत्वों के द्वारा निर्मित होता है, दूसरा अन्तरिक वास्तविक दिव्य रूप, जिसे जीव कहते हैं। जीव दिव्य तत्वों के द्वारा निर्मित होता है, जीव को आध्यात्मिक उत्थान के लिए पहले बुद्धितत्वों के द्वारा अहंकार तत्व को जातक होता है। अहंकार यानि स्वयं का रूप अहंकार दो प्रकार का होता है मिथ्या अंहकार शरीर को अपना वास्तविक रूप समझना जो शरीर में रहते हुए कभी कभी समाप्त नहीं हो सकता ज्ञान पर अज्ञान का आवरण चढ़ा रहता है अचेत या निंद्रा अवस्था में ही रहते हैं। भगवान की कृपा से श्रद्धा भाव सचेत अवस्था में आने पर मिथ्या अंहकार मिटने पर ज्ञान प्रकट होने लगता है। जीव मोक्ष के मार्ग पर चलने लगता है। प्रकृति में न दण्ड है और न पुरुषकार प्रकृति में तो कर्म तथा क्रिया और उसकी प्रतिक्रिया जैसा करो वैसा भरो नियमानुसार उसका फल है।

-कृष्ण गोपाल कुमावत गैदर (के.जी. रेडियो)
मो. 9468900276

नेशनल टेक्नोलॉजी डे : 11 मई

राजस्थान के पोकरण में खेतोलाई गांव के पास भारत ने 11 व 13 मई, 1998 को 5 परमाणु परीक्षण कर सभी को चौंकाया, सेटेलाइट तकनीक से युक्त अमेरिका आदि तकनीकी रूप से विकसित देशों को भी इसकी तैयारी की जानकारी नहीं हो सकी। तब अटल बिहारी वाजपेयी प्रधानमंत्री थे व APJ अब्दुल कलाम परमाणु परीक्षण के इन्चार्ज थे।

भारत पर तब अन्तर्राष्ट्रीय दवाब था किन्तु वाजपेयी ने देशहित में यह परीक्षण करने का निर्णय लिया। इन परीक्षणों के साथ ही भारत परमाणु सम्पन्न देश बना। यद्यपि भारत पर अनेक देशों ने आर्थिक प्रतिबंध लगाये, पर भारत नहीं झुका। परीक्षण के बाद वाजपेयी ने नारा दिया, **'जय जवान, जय किसान और जय विज्ञान।'**

इस दिन को याद करने के लिए हर साल इस दिन को **''नेशनल टेक्नोलॉजी डे''** के रूप में मनाया जाता है।

वि/1 श्री महेश चन्द जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/2 श्री नीरज धुन्धारिया, आनन्दपुरी, जयपुर
वि/3 श्री मनीष खोवाल कुमावत एडवोकेट, जयपुर
वि/4 श्री मनोज कुमार सिरसवा, जयपुर
वि/5 श्री शंकर लाल जायलवाल, टोंक रोड, जयपुर
वि/6 श्री यतेन्द्र अजमेरा, त्रिमूर्ती सर्किल, जयपुर
वि/7 श्री राकेश चन्द सिरोहिया, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/8 श्री संदीप नागा, बापू नगर, जयपुर
वि/9 श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा, भौरोदिया जयपुर
वि/10 श्री मोहन कुमार घोड़ीवाल, जयपुर
वि/11 श्री नवल सरथल्या, महावीर नगर, जयपुर
वि/12 श्री पंकज कुमावत, वैरा झोटवाड़ा, जयपुर
वि/13 श्री चेतन कुमावत, डीसीएम, जयपुर
वि/14 श्री मनोज माचीवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/15 श्री दीपक सिरोहिया, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/16 श्री लक्ष्मी नारायण घोड़ीवाल, जयपुर
वि/17 श्री योगेश वर्मा, खड़गटा, टोंक रोड, जयपुर
वि/18 श्री शैलेन्द्र खटगटा, टोंक रोड, जयपुर
वि/19 श्री विनोद बालोदिया, दुर्गापुरा जयपुर
वि/20 श्री ओमकार मल घोड़ेला, रींगस रोड, जयपुर
वि/21 श्री रामपाल मारवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/22 श्री रामप्रकाश बेरा, मुरलीपुरा, जयपुर
वि/23 श्री मोहनलाल घोड़ेला, नींदड़, जयपुर
वि/24 श्री कालूराम होदकास्या, नींदड़, जयपुर
वि/25 श्री जयनारायण मारवाल, जोटवाड़ा, जयपुर
वि/26 श्री महेंद्र खरोलिया, चांदपोल बाजार, जयपुर
वि/27 डॉ. सीताराम नागा, जोबनेर, जयपुर
वि/28 श्री शंकरलाल मामोरिया, 22 गोदाम, जयपुर
वि/29 श्री रामस्वरूप खोराणिया, जयपुर
वि/30 श्री नरेंद्र कुमार आर्य, ब्यावर, अजमेर
वि/31 श्री चेनसुख बड़ीवाल, बगरू, जयपुर
वि/32 श्री चांदमल कुमावत (घोड़ेला), मुंबई
वि/33 श्री राजसिंह गैदर, टोंक रोड, जयपुर
वि/34 श्री मनोज ब्याडवाल, श्रीराम नगर झोटवाड़ा
वि/35 श्री गोपाल मारवाल, श्रीमाधोपुर, सीकर
वि/36 श्री मनीष मारवाल, निवारू रोड, जयपुर
वि/37 श्रीरूप सिंह कारगवाल, जयपुर
वि/38 श्री दया प्रकाश जलांधरा, इंदौर
वि/39 श्री नवीन कुमार वर्मा भौंरोदिया, इंदौर
वि/40 श्री राजेंद्र प्रसाद, तमिलनाडु
वि/41 श्री शिव भगवान चेजारा, सिरस्वा, सीकर
वि/42 श्री तेज प्रकाश नागा, जोबनेर, जयपुर
वि/43 श्री पृथ्वीराज जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/44 श्री मोहन कुमार बालोदिया, जयपुर
वि/45 श्री पुरुषोत्तम लाल घोड़ेला, जयपुर
वि/46 श्री ललित स्वरूप पोडेला, जयपुर

विशिष्ठ संरक्षक

वि/47 श्री विजय कुमावत (भौरोंदिया), जयपुर
वि/48 श्री अरविंद सिरस्वा, पचार, सीकर
वि/49 श्री मूलचंद खोवाल, जयपुर
वि/50 श्रीमती शशि वर्मा, धुमुनिया, दुर्गापुरा, जयपुर
वि/51 श्री राजेंद्र जूनवाल टोंक फाटक, जयपुर
वि/52 श्री सतीश चंद खाटूवाल, जयपुर
वि/53 श्री नन्द किशोर सिरस्वा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/54 श्री संतोष खरनारिया कुमावत, अजमेर
वि/55 श्री प्रमोद कुडावलिया, छत्तीसगढ़,
वि/56 श्री मनोज बड़ीवाल, रायपुर, छत्तीसगढ़
वि/57 श्री श्रीराम नीमिवाल, जयपुर
वि/58 श्री भीवाराम दम्बीवाल, निर्माण नगर, जयपुर
वि/59 श्री पन्नालाल सिरस्वा, निर्माण नगर, जयपुर
वि/60 श्री रामस्वरूप कुमावत, बड़ीवाल, मुम्बई
वि/61 श्री हेमेंद्र सिंह गैदर, टोंक रोड, जयपुर
वि/62 श्री साधुलाल चेजारा (सिरस्वा), जयपुर
वि/63 श्री गोपाललाल बासनीवाल, जयपुर
वि/64 श्री मोहनलाल मामोड़िया, जयपुर
वि/65 श्री रामकुमार बिरथलिया, जयपुर
वि/66 श्री जगदीश कुमावत
वि/67 श्री मुकेश कु. कुदीवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/68 श्री रोहिताश मोरवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/69 श्री शुभकरण किरोड़ीवाल, सूरत
वि/70 श्री नान्छीलाल कुददीवाल, जयपुर
वि/71 श्री रमेश चंद माचीवाल, त्रिनगर, दिल्ली
वि/72 श्री राधेश्याम घासोलिया, दिल्ली
वि/73 श्री हंसराज मारवाल, ब्यावर
वि/74 श्री मेघराज सिरस्वा, छत्तीसगढ़
वि/75 श्री सूरजमल अनावड़िया, लाल कोठी, जयपुर
वि/76 श्री छीतरमल धुंधारिया, निवारू रोड, जयपुर
वि/77 श्री रामगोपाल खोराणिया, सोडाला, जयपुर
वि/78 श्री हरिशंकर राजौरा, जयपुर
वि/80 डॉ. प्रवीण कुमार मारवाल, झुंझुनूं
वि/81 श्री अर्जुन लाल धुन्धारिया, जयपुर
वि/82 श्री ओम प्रकाश धुन्धारिया, जयपुर
वि/83 श्री गोविंद नारायण तांगड़ा, जयपुर
वि/84 श्री सुरेंद्र सिंह तारकसी, बापू नगर, जयपुर
वि/85 श्री माधव दास बालोदिया, जयपुर
वि/86 श्री मोहित धुन्धारिया, जयपुर
वि/87 श्री बाबूलाल मंडावरा, जयपुर
वि/88 श्री मनीष वर्मा (सिरस्वा), दुर्गापुरा, जयपुर
वि/89 श्री हेमांक खड़गटा, मोती डूंगरी, जयपुर
वि/90 श्री कैलाश जलान्धरा, माल की ढाणी, दूदू
वि/91 श्री लोकेश जंहाजपुरिया, नंदपुरी, जयपुर
वि/92 श्री नन्दकिशोर आसीवाल, रिंगस, सीकर
वि/93 श्री बाबूलाल धुन्धारिया, वीकेआई, जयपुर
वि/94 श्री रामसिंह बैथाड़िया, तुलसी सेन्ट्रल मैन बाजार, सांगानेर
वि/95 श्री मदन लाल कुमावत, निर्माण नगर, जयपुर
वि/96 श्री नरेंद्र मामोडिया, अशोक नगर, उदयपुर
वि/97 श्री बाबूलाल कुमावत, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/98 श्री रमेश मारवाल, खातीपुरा, जयपुर
वि/99 श्री प्रहलाद नारायण कुमावत, जयपुर
वि/100 श्री सत्यनारायण कुमावत, जयपुर
वि/101 श्री दीपेश टी. मॅडावरा, जयपुर
वि/102 श्री राकेश कुमावत (एडवोकेट), बरकत नगर, जयपुर
वि/103 श्री ओमप्रकाश कुमावत, जयपुर
वि/104 श्री रमेश चन्द ब्याड़वाल, नई दिल्ली
वि/105 डॉ. एन.के. कुमावत, लालकोठी, जयपुर
वि/106 श्री राम प्रसाद छापोला, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/107 श्री गिरधारी लाल सिंघनवाल, उदयपुर
वि/108 श्री राकेश कुमावत (धनारिया), उदयपुर
वि/109 श्री बाबूलाल वर्मा (ब्याड़वाल), नई दिल्ली
वि/110 श्री कन्हैयालाल खण्डारिया, जयपुर
वि/111 डॉ. महेश कुमार जालवाल, जयपुर
वि/112 डॉ. श्रीमती श्यामा कुमावत, उदयपुर
वि/113 श्री महेश कुमार कुमावत, किशनगढ़
वि/114 श्री मुकेश वर्मा (मरोड़िया), जयपुर
वि/115 श्री जयकिशन कुमावत (सोकिल), चौमूं
वि/116 श्री गजेंद्र मारवाल, सांगानेर, जयपुर
वि/117 श्री सुनील तोंदवाल, वीकेआई, जयपुर
वि/118 श्री मदनलाल जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/119 श्री सुमित कुमार घोड़ेला, मुंबई
वि/120 श्री ओम प्रकाश का कारगवाल, ब्यावर
वि/121 श्री प्रेमचन्द कुमावत (बैरा), झोटवाड़ा, जयपुर
वि/122 श्री योगेश वर्मा, मुम्बई
वि/123 श्री राजेश धूंधारिया, डूंडलोद कॉलोनी, जयपुर
वि/124 श्री सुनील प्रकाश वर्मा, मुम्बई
वि/125 श्री उम्मेद सिंह नन्दीवाल पुत्र श्री जी.एस. नन्दीवाल, जयपुर
वि/126 श्री रामलाल बैथाड़िया
वि/127 श्री लोकेन्द्र बालोदिया, जयपुर
वि/128 श्री कुमार गौरव कुमावत, कोटा
वि/129 श्रीमती मेघना कुमावत, जयपुर
वि/130 श्री गोपाल लाल कुण्डलवाल, जयपुर
वि/131 श्री दामोदर लाल जलान्दरा, जयपुर
वि/132 डॉ. पी.एम. कुमावत, उज्जैन
वि/133 श्री विमल कुमावत, जयपुर
वि/134 श्री महेन्द्र सिंह, बापूनगर, जयपुर
वि/135 श्री गोपाल लाल-सीताराम, जयपुर
वि/136 रुपेश मारोठिया, बरकतनगर, जयपुर

''कुमावत इंडिया'' पत्रिका परिवार की ओर से सभी दिवंगत आत्माओं को अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

19 अप्रेल श्री रमेश चन्द बबेरीवाल, प्रतापनगर, जयपुर
19 अप्रेल श्री लाल चन्द जी कण्डेरीवाल पुत्र स्व. श्री ग्याजरसी लाल, हाथोज, जयपुर
19 अप्रेल श्री भागीरथ जूनवाल, सोडाला, जयपुर
20 अप्रेल श्री कन्हैयालाल आसीवाल, 22 गोदाम, जयपुर
21 अप्रेल श्री नवरतन जी जालवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
21 अप्रेल श्री चन्द्र प्रकाश जी अजमेरा पुत्र स्व. श्री गणेश लाल, मालवीय नगर, जयपुर
21 अप्रेल श्री भंवरलाल जी खिवाल गोपी नगर, सांगानेर, जयपुर
21 अप्रेल श्रीमती मंजू देवी धर्मपत्नी स्व. श्री राजेन्द्र प्रसाद कुमावत, झोटवाड़ा, जयपुर
22 अप्रेल श्रीमती मधु देवी धर्मपत्नी स्व. श्री मदन लाल खनारिया, दुर्ग, चित्तोड़
22 अप्रेल श्री मुकेश वर्मा (मामोडिया), खेजड़ो का रास्ता, जयपुर
25 अप्रेल श्रीमती गुलाब देवी धर्म पत्नी स्व. श्री किशन लाल जी दम्बीवाल, गुढ़ाबैरसल
26 अप्रेल श्री संजय कुमावत पुत्र स्व. श्री ओमप्रकाश दम्बीवाल, चौमूं
26 अप्रेल श्री पुरुषोत्तम वर्मा पुत्र श्री हरीश चन्द्र किरोड़ीवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
26 अप्रेल श्री रामदेवजी सिरस्वा (पचार वाले), अम्बावाड़ी, जयपुर
26 अप्रेल श्रीमती गीता देवी धर्मपत्नी रूपाराम छापोल, अजमेर
27 अप्रेल श्रीमती गीता देवी धर्मपत्नी शंकर लाल कारगवाल, नसीराबाद, अजमेर
30 अप्रेल श्री विशाल तोंदवाल, जयपुर
30 अप्रेल श्रीमती शान्ती देवी धर्मपत्नी रामचन्द्र धुंधारिया, कृष्णाविहार, जयपुर
1 मई श्रीमती शांति देवी धर्मपत्नी स्व. श्री प्रताप जी खूंखवाल, लालकोठी, जयपुर
1 मई श्रीमती चन्द्रकान्ता देवी धर्मपत्नी श्री रामगोपाल किरोड़ीवाल, अजमेर
1 मई श्री सूरजमल आसीवाल, गोविन्दगढ़, अजमेर
2 मई कुमारी प्रांजली पुत्री श्री नाथूलाल दम्बीवाल, अजमेर
2 मई श्री धमेन्द्र कुमावत पुत्र श्री मदनलाल जी सिरस्वा, विद्याधर नगर, जयपुर
4 मई श्रीमती पैफोदवी धर्मपत्नी स्व. श्री भागीरथ जी दौराया, सांगानेर, जयपुर
4 मई श्रीमती परमेश्वरी देवी धर्मपत्नी श्री प्रताप नारायण जी काम्या विद्याधन गर, जयपुर
4 मई श्रीमती किस्तूरी देवी धर्मपत्नी श्री चिरंजीलाल जी राहोरिया, सीकर हाउस, जयपुर
4 मई श्री प्रेमचन्द जूनवाल, महेदावास गेट के पास, टोंक, जयपुर
6 मई श्री अमर चन्द नेमीवाल, नरायना, जयपुर
7 मई श्रीमती मधु वर्मा धर्मपत्नी श्री राजेन्द्रप्रसाद महेश नगर, जयपुर
11 मई श्री छीतरमल जी पुत्र स्व. श्री घसीराम जी जलान्धरा, चारणवास, जयपुर
11 मई श्रीमती भंवरी देवी पत्नी स्व. श्री श्रवण कुमार जी राजोरिया, झोटवाडा, जयपुर
13 मई श्री रामचनण जी पुत्र स्व. श्री घीसीलाल जी मिस्त्री (अनावड़िया), सांगानेर, जयपुर
13 मई श्रीमती सरजू देवी पत्नी स्व. श्री नानूराम जी मारवाल विद्याधर नगर, जयपुर
15 मई श्रीमती विद्या देवी धर्मपत्नी श्री ग्यारसीलाल जी सिरस्वा, महावीर नगर, जयपुर
15 मई श्रीमती रूकमणी देवी धर्मपत्नी कल्याण सहाय अनावड़िया, झोटवाड़ा, जयपुर
15 मई श्री रामचन्द्र (डूंगरमल जी) तारकसी, बरकत नगर विस्तार, जयपुर
15 मई गुलाब चंद पुत्र स्व. श्री कल्याणमल खोवाल, लालकोठी, जयपुर
17 मई श्री जटाशंकर मारवाल, शास्त्री नगर, जयपुर

विवाह योग्य युवक-युवतियों की सूची

युवक

नाम	शिक्षा	व्यवसाय	जन्म	ऊंचाई	गौत्र				संपर्क सूत्र मो. नंबर	स्थान
					स्वयं	माता	दादी	नानी		
छविकान्त	B.Com.	Paytem (Groupleader)	20.4.96	5'8''	करोड़ीवाल	सारड़ीवाल	कागरवाल	घोड़ेला	9351383277	जयपुर
अभिषेक	M.Tech.	Pvt. MNC	16.12.93	5'7''	टांक	वनावडिया	घमेरिया	निन्नासवाल	9828137527	उदयपुर
मोहित	B.Com.,LLB	Advocate in Indore	30.10.94	6'0''	लोरवाड़िया	मारवल	जलान्दरा	उज्जीवाल	9826210135	इन्दौर
सौरभ	M.Com.	Accountant	16.10.91	5'9''	खोवाल	गैदर	मारोठिया	जालवाल	6375062901	जयपुर
रचित	B. Tech (EE)	Pvt. Sr. Enginer	16.7.94	5'8''	टांक	खोरानिया	बबेरीवाल	मंडावरा	9351767706	उदयपुर
दर्शन	B.A.	Business	10.1.92	5'8''	देवतवाल	झुंझुनोदिया	किरोड़ीवाल	सोकल	9214527051	जयपुर
हिमांशु	M.Com.	Govt. (Asstt manager)	27.7.95	5'11''	बात्रा	अजमेरा	चंदेरिया	छाबल्या	9414783807	जयपुर
दिव्याम	12th	Balaji comomters	25.5.95	5'9''	राहोरिया	तूंदवाल	मारोठिया	सिंगोठिया	9509372074	जयपुर
घनश्याम	M.Com.	Emitra shop	8.8.93	5'8''	उदयवाल	सिरोहिया	कुलचानिया	दौराया	9950840310	जयपुर
राजकुमार	B.Com.	Pvt. (18 Lakh PA)	8.7.92	-	बबेरीवाल	सारड़ीवाल	उदयवाल	अडानिया	9649772555	अजमेर
राहुल	B.Com., LLB	Beawer Court	1.5.95	5'5''	कुण्डलवाल	उदयवाल	देवतवाल	मारवाल	9928711015	ब्यावर
दुर्गेश	MBA	Self Business	23.3.93	5'5''	दौराया	खोवाल	जाजपुरिया	उदयवाल	9414261880	जयपुर
अशोक	B.Sc.	Indina Air force	10.8.98	5'7''	किरोड़ीवाल	सारड़ीवाल	आसीवाल	बासनीवाल	6361659945	सीकर
हर्ष	M.Tech.	Asst. Profesor	1.8.89	5'51/2'	मामोडिया	काम्या	जायलवाल	धमुनिया	9414408050	चौमूं
एकांश गोपाल	M.Com., MBA	Pvt. Job	29.1.96	6'3''	नीमीवाल	आसीवाल	घोड़ेला	बड़ीवाल	9928408729	जयपुर
रवि	M.Com..MBA	Pvt. Job	17.7.99	-	बारावाल	सिरोहिया	खोरानिया	बधानिया	8209214601	जयपुर
रोहित	M.Com (ABST)	Executive	19.7.91	5'10''	बड़ीवाल	राजोरिया	तूंदवाल	खोवाल	8561838329	जयपुर
हरिनारायण	B.A.,IIT, LLB	Account Manager	28.2.99	6'0''	ब्याडवाल	मारवाल	मामोडिया	सिरस्वा	7727032530	-

युवतियाँ

नाम	शिक्षा	व्यवसाय	जन्म	ऊंचाई	गौत्र				संपर्क सूत्र मो. नंबर	स्थान
					स्वयं	माता	दादी	नानी		
याशिका	B.A.	-	17.9.1999	5'3''	सिरोहिया	बालोदिया	बधाणिया	पीपलोदा	9950114171	जयपुर
नीशा	M.A. B.Ed.	-	12.5.97	5'5''	जूनवाल	रेनीवाल	मारोठिया	नराणिया	9828785605	-
श्वेता	M.A. Fashion Des.	Private Job	9.12.92	5'3''	दौराया	खण्डारिया	राजोरिया	बन्शीवाल	9785026188	जयपुर
मीनाक्षी	M.Sc	Statistical Officer	25.6.91	5'7''	खोराणिया	छापोला	नागा	जेठीवाल	9887973122	जोबनेर
पूजा	M.A. NET	Asstt. Profesor	12.1.88	5'2''	अनावड़िया	सांखला	अडानिया	देवतवाल	9460814992	जोधपुर
अनूभा	M.Com	-	25.3.93	5'3''	बालोदिया	बबेरीवाल	अजमेरा	कारगवाल	9414250972	जयपुर
आशा	M.Com.	-	24.5.88	5'2''	भोरोदिया	मारोठिया	धमुनिया	नागड़ा	9001904969	जयपुर
जानवी (मांगलिक)	M.Com, Web De	PHP Developer	21.1.96	5'3''	बड़ीवाल	रेहोरिया	मारवाल	गुड़ीवाल	9799414150	जयपुर
दीपिका	B.A., ITI	-	12.11.98	5'9''	आसीवाल	नागा	ननिहाल	-	9079368133	किशनगढ़
अंकीता	B.Sc., M.Sc.	Private	30.11.98	5'3''	खोवाल	कुण्डलवाल	नरानिया	तूंदवाल	8446909499	झुंझुनूं
डॉ. आरती	M.B.B.S.	Private Hospital	3.6.94	5'3''	धुंधारिया	दम्बीवाल	भडानिया	नरानिया	9024129220	जयपुर
चान्दनी	B. Farma MBA	Private	25.9.91	5'2''	खरनारिया	मारवाल	रेनीवाल	होदकास्या	9214535336	भीलवाड़ा
साक्षी	B.Com. LLB,LLM	-	18.9.93	5'5''	खोराणिया	किरोड़ीवाल	बिरथलया	मारवाल	8441005131	जयपुर
हिमानी	M.A.	-	13.8.96	-	बसवाल	जालनिया	कारगवाल	देवतवाल	9799981123	आबूरोड
पूजा(Divorcy)	B.Ed., M. Phil	Pvt. School	10.8.86	5'2''	बरमूंडा	मोरीवाल	बबेरवाल	उमेरिया	9351197516	बीकानेर
आस्था(मांगलिक)	B. A. (II year)	-	8.11.2000	5'9''	किरोड़ीवाल	अनावड़िया	माचीवाल	सिरोडीवाल	7023253203	
दुर्गेशनन्दनी	B.Tech (IT)	Private	1.12.94	5'2''	किरोड़ीवाल	सारड़ीवाल	कारगवाल	घोड़ला	9351383277	जयपुर
हितु/वर्णिका	M.Com. (Econ.)	Kotak Mhindra	3.2.96	5'4''	मारवाल	कुदाल	खटोड़	घोड़ेला	9828341095	जयपुर

नोट : 1. यदि आप अपनों की वैवाहिक जानकारी नि:शुल्क प्रकाशित कराना चाहते हैं तो उक्त कॉलम के अनुसार कार्यालय को जानकारी प्रेषित करें।

2. प्रदत्त सूचना के आधार पर यदि आपके किसी अपने का सम्बन्ध हो जाये तो कृपया 'कुमावत इंडिया' पत्रिका को सूचित करने का कष्ट करें।

पोस्टकार्ड से भी कम कीमत पर आपका संदेश, विज्ञापन समस्त भारत में पहुँचाने का एकमात्र सशक्त माध्यम ''कुमावत इंडिया पत्रिका''

समाज बन्धुओं से निवेदन है कि पत्रिका में प्रकाशन हेतु यदि आप प्रकाशन सामग्री:- समाचार, फोटो, लेख, कविता, प्रतिभाओं का परिचय, सामाजिक गतिविधियों, जनउपयोगी सूचना आदि प्रकाशित करवाना चाहते हैं तो कृपया kumawatindiapatrika @gmail.com पर मेल करें अथवा कार्यालय पते पर सामग्री प्रेषित करें।

-सम्पादक

आवश्यक सूचना

पत्रिकाएं नियमित रूप से हर माह की 25 तारीख को जयपुर से निर्धारित डाकघर में भेज दी जाती हैं। यदि किसी सदस्य को एक सप्ताह के अन्दर पत्रिका नहीं मिलती है तो आप अपने पोस्टमैन व पोस्ट मास्टर से शिकायत करें एवं हमें भी सूचित करें।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के तथ्य, आंकड़े व विचार लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं तथा इसकी मौलिकता व सत्यता के लिए सम्पादक मण्डल, पत्रिका, प्रकाशक एवं ट्रस्ट विधिक रूप से उत्तरदायी नहीं है।

■ किसी भी लेखन सामग्री या उसके किसी भाग के लिए प्रकाशन से 2 माह बाद कोई आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी।

समस्त विवादों के लिए न्यायिक क्षेत्र जयपुर होगा।

पूर्वजों की याद को संजोये रखे

विनम्र निवेदन

हमारे पूर्वज जमीन, जायदाद, सोना, चांदी आदि अमूल्य सम्पत्ति छोड़कर स्वर्ग चले जाते हैं। हम व्यस्तता के कारण उनकी चिरस्मृति बनाये रखने में असमर्थ हो जाते हैं। कुमावत इण्डिया पत्रिका समाज बन्धु 4000 रु. शुल्क जमा कराकर अपने पूर्वज (माता-पिता, दादा-दादीजी, नाना-नानी) की पुण्य तिथि फोटो सहित 10 वर्ष तक 1/8 पेज पर मल्टीकलर में प्रकाशित करा सकते हैं। - सचिव

-: विशेष निवेदन :-

1. शोक समाचार, तीये की बैठक के समाचारों में नाम के साथ 'कुमावत' अवश्य लगाएं। क्योंकि समान गोत्र अन्य समाजों में भी मिलते हैं।
2. इस पत्रिका में हाल ही में दिवंगत हुए समाजजनों की श्रद्धांजलि एक लाईन में नि:शुल्क प्रकाशित की जाती है। इस हेतु पत्रिका को सूचित करने का कष्ट करें।

सदस्यता समाप्ति सूचना

3 वर्षीय सदस्यता वाले सदस्यों को सूचित किया जाता है कि उसकी सदस्यता समाप्त हो गई। कृपया शीघ्र नवीनीकरण करावें।

सामाजिक संस्थाओं व ट्रस्टों को विज्ञापन में 10 प्रतिशत की छूट।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका नहीं मिलने पर यहां सम्पर्क करें

डाक विभाग एवं अन्य के कारणों से आपको पत्रिका नहीं मिलती है तो कृपया अपने नजदीक सेन्टर पर जाकर प्राप्त करने का कष्ट करें तथा कृपया पत्रिका कार्यालय को पत्र, पोस्ट कार्ड आदि द्वारा सूचित करने का कष्ट करें।

जयपुर :

1. **लालकोठी बापूनगर**-श्री सुरेन्द्र नागा, सिवाड़ एरिया, बापूनगर, मो. 9414994006
2. **शिल्प कॉलोनी, झोटवाड़ा**- श्री महेश जलान्धरा मो. 9509344684
3. **कुमावत कॉलोनी झोटवाड़ा**- श्री सुरेन्द्र मारोठिया मो. 9314820385
4. **जयपुर शहर**-श्री राजसिंह बधानियां, म.नं. 454, मिश्र राजाजी का रास्ता, मो. 9414238799
5. **सांगानेर**-श्री भीमसिंह सिरोहिया, मालपुरा गेट मो. 9414359364
6. **मालवीय नगर**-श्री चन्द्रप्रकाश अजमेरा मो. 9928088815
7. **22 गोदाम**-श्री चेतन बालोदिया, राज ब्लॉक, बी-81, रोड नं. 4 मो. 9414052736
8. **आदर्श नगर, तिलक नगर**-श्री शैलेन्द्र खड़गटा, खड़गटा भवन, मोती डूंगरी, जयपुर मो. 9351682036
9. **दहमी कलां, बगरू**-श्री चेनसुख बड़ीवाल, ग्लोबल एकाउन्ट सर्विस दहमी कलां बालाजी स्टेण्ड मो. 9929012987
10. **करधनी-कालवाड़ रोड**-श्री गणेश राम मारवाल, मै. जयश्री राम हार्डवेयर एण्ड पावर टूल्स टिम्बर दुकान नं. 90-91, करधनी शॉपिंग सेन्टर 9 दुकान कालवाड रोड, मो. 9828063267
11. **टोंक फाटक**- गणपति आर्ट एण्ड फ्रेम, 26 आदर्श बस्ती, मो. 8058157147
12. **बरकत नगर-महेश नगर**-श्री विशाल कम्प्यूटर्स, बरकत नगर महेश नगर फाटक के पास, जयपुर, मो. 94613-43432
13. **ब्यावर**-श्री नरेन्द्र आर्य, मो. 8107944493
14. **दिल्ली**-श्री राधेश्याम घासोलिया, मो. 9818711580
15. **फुलेरा**-श्री सुरेश नागा, जगदम्बा प्रिंटिंग प्रेस, बस स्टेण्ड के पास
16. **सोडाला** -घनश्याम फोटो लेमिनेशन एण्ड फ्रेमिंग, 31, कुमावत कॉलोनी, मो.9352070394

सुनीता कुमावत ने मास्टर ऑफ वेटेनरी साइंस में गोल्ड मैडल जीता

सामी गांव के धोंध ब्लॉक, सीकर की डॉ. सुनीता कुमावत पुत्री श्रीमती मंजू देवी-धन्नाराम कुमावत ने गुरु अंगद देव वेटेनरी एवं साइंस यूनिवर्सिटी, लुधियाना (पंजाब विश्वविद्यालय) से मास्टर ऑफ वेटेनरी साइंस में टॉप करके गोल्ड मैडल जीता है। इन्हें 50 ग्राम सोने का मेडल और प्रमाण पत्र देकर माननीय राज्यपाल बनवारीलाल पुरोहित एवं कुलपति डॉ. इन्द्रजीत द्वारा सम्मानित किया गया है। सुनीता बचपन से ही प्रतिभावान छात्रा थी तथा 12वीं साइंस नवोदय विद्यालय से करने के बाद इनका चयन साइंस यूनिवर्सिटी लुधियाना में हुआ था। सुनीता हाल ही में साइंस यूनिवर्सिटी लुधियाना में लैब प्रोजेक्ट रिसर्च पर कार्यरत है। इनके पिता धन्नाराम के अनुसार सुनीता सिविल सर्विसेज में जाना चाहती है।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से डॉ. सुनीता कुमावत को हार्दिक बधाई एवं भावी जीवन के लिए शुभकामनाएं।

बाबूलाल मारोठिया की पेंटिंग प्रदर्शित

हस्तशिल्प वस्त्र मंत्रालय एवं नेशनल डिजाइन सेन्टर की ओर से पारम्परिक चित्रकला प्रदर्शनी और कार्यशाला का आयोजन नेशनल आर्ट म्यूजियम प्रगति मैदान दिल्ली में हुआ। इसमें 20 राज्यों के आर्टिस्ट हिस्सा ले रहे हैं। शिल्पगुरु बाबूलाल मारोठिया की विभिन्न शैलियों की 20 पेंटिंग्स इसमें प्रदर्शित हुई। श्री माराठिया ने प्रतिभागियों को मिनिएचर पेंटिंग्स की बारीकियां समझाई।

डा. सुकीर्ति चेजारा कृषि प्रसार अधिकारी नियुक्त

साइंटिस्ट डा. सुकीर्ति चेजारा पुत्री श्री उल्लास चंद चेजारा को हरियाणा के रोहतक जिले में कृषि प्रसार अधिकारी (District extention specialist officer) नियुक्त किया गया हैं।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से डा. सुकीर्ति चेजारा साइंटिस्ट को हार्दिक बधाई।

जयसिंह गुडीवाल सह सम्पादक की विशेष रिपोर्ट

कुमावत इंडिया पत्रिका के साथ

जायका जयपुर का...

गर्मियों में शरीर की ठंडक बरकरार रखेगी लस्सीवाला की लस्सी

जयपुर में आग बरसाता सूरज चैन नहीं लेने दे रहा है। गर्मी से बचने का एक ही उपाय है कि कुछ 'ठंडा-ठंडा,कूल-कूल' मिल जाए, ताकि शरीर में ठंडक आए तो उसका असर मन पर भी पड़े। इस धधकती और चिलचिलाती गर्मी से बचने का तो एक ही उपाय है, वह है अगर ठंडी-ठंडी लस्सी पीने को मिल जाए तो दिमाग में भी ताजगी आ जाए। हम आपको लस्सी पिलाने के लिए लस्सीवाला एमआई रोड़, जयपुर ले चल रहे हैं। यहां आपको जरूर मजा आएगा।

दिल्ली के चांदनी चौक की मशहूर परांठे वाली गली की ही तरह जयपुर में भी कई दुकानें आज़ादी के भी पहले से बनी हुई हैं और अपने स्वाद के लिए देश-भर में खास पहचान रखती हैं। जयपुर शहर अपनी संस्कृति में जितना रंग-बिरंगा है, स्वाद में भी उतनी ही विविधता और मिठास लिए है। पुराने किलों व ऐतिहासिक इमारतों की तरह ही यहां की दुकानें भी इतिहास के पन्नों में दर्ज होने लायक हैं। **जायका जयपुर का... कुमावत इंडिया पत्रिका** के साथ में इस बार हम रू-ब-रू करवा रहे हैं लस्सीवाला से। जिनकी लस्सी का स्वाद जयपुर ही नहीं पूरे देश में अपनी विशिष्ठ पहचान बनाए हुए है। हमने वर्षों और पीढ़ियों से यहां लस्सी का स्वाद लिया है। जयपुर की व्यस्तम एमआई रोड पर स्थित प्रतिष्ठित दुकान लस्सीवाला पिछले सत्तर से अधिक वर्षों से जयपुरवासियों को '**लस्सी**' परोस रही है। वर्ष 1944 में किशनलाल अग्रवाल द्वारा इस दुकान का शुभारम्भ किया गया था। यह दुकान उस समय जयपुर में अपनी तरह की पहली दुकान थी। दुकान की विशेषता यही है कि यहां लस्सी के अलावा कुछ नहीं मिलता है। लस्सी भी सीमित वैरायटी की, लेकिन आप पियेंगे तो आप भी मानने लगेंगे कि असली लस्सी इसी को कहते हैं। सब कुछ असली, न पानी और न ही कोई अननेचुरल पेय। स्वाद ऐसा कि आपका मन करेगा कि लस्सी की एक बूंद भी बेकार नहीं जानी चाहिए।

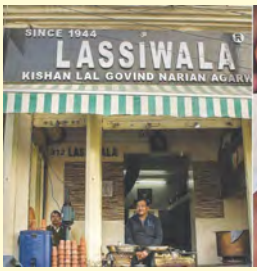

लस्सी के लिए जयपुर शहर में सबसे अच्छी दुकानों में से एक के रूप में गिना जाता है, अनेक हाई प्रोफाइल सेलेब्स और बॉलीवुड अभिनेताओं ने भी लस्सीवाला का दौरा किया है और इनकी 'लस्सी' के लाजवाब स्वाद की प्रशंसा की है। अमिताभ बच्चन, मुकेश अंबानी, शिल्पा शेट्टी, डिंपल कपाड़िया, शोभा डे सहित अनेक इनकी 'लस्सी' के प्रशंसक हैं।

पारंपरिक रूप से मीठे और नमकीन के रूप में उपलब्ध लोकप्रिय लस्सी अब चीनी मुक्त भी उपलब्ध करवाई गई है। चीनी मुक्त लस्सी भी लोगों को खूब पंसद आ रही है। शहर में अन्य दुकानें देर शाम तक खुलती है परन्तु इनकी दुकान प्रात: 7 बजे से सायंकाल 4 बजे तक खुली रहती है। जब हमने देर तक दुकान न खोलने का कारण जानना चाहा तो बताया कि शाम तक दही खट्टा हो जाता है और वास्तव में उस समय तक बिकने के लिए लस्सी बचती ही नहीं है। लगभग 190 एमएल 40 रुपये और 390 एमएल 80 रुपये शुगर फ्री लस्सी 50 व 100 रुपये के दो आकारों के 'कुल्हड़' में उपलब्ध है साथ हीं यहाँ का दही भी बहुत प्रसिद्ध है जो आपको 140 रुपये किलो में उपलब्ध है। यह अत्यधिक पसंदीदा पेय दही और बर्फ से बनाया जाता है यहाँ बनी लस्सी के स्वाद में आज भी कोई कमी नहीं आई है।

अब यहाँ आसपास इसी नाम से और भी दुकानें खुल गई है पर आज भी लस्सीवाला के यहां हर वक्त भीड़ देखी जा सकती है। हालांकि लस्सी के कुल्हड़ का आकार अब कम होता जा रहा है और कीमतें बढ़ती जा रही है। परन्तु गुणवत्ता में कोई कमी नहीं आई है। आज भी लस्सीवाला की लस्सी का स्वाद लाजवाब है। जयपुरवासियों के अलावा रोजाना सौ से ज्यादा विदेशी पर्यटक दुकान पर लस्सी पीने आते हैं। लस्सीवाला अब जयपुर में विभिन्न समारोहों में 'लस्सी' की मांग को भी पूरा करता है। इस व्यापक रूप से ज्ञात और स्वीकृत लस्सीवाला में लस्सी को निश्चित रूप से मिस नहीं किया जाना चाहिए। लोगों का कहना है,उसका जो स्वाद है, वह कहीं नहीं मिलता है।

अगर आप भी इस भीषण गर्मी में ठंडी लस्सी का आनन्द लेना चाहते है और कतार में खड़े होना नहीं चाहते हैं तो आपके लिए पैंकिग सुविधा भी उपलब्ध है। लस्सीवाला की सबसे बड़ी खासियत इसका अनूठा स्वाद है जो आपको और कहीं नहीं मिलेगा। आप भी इसका जायका लेना ना भूलें।

KPL सेशन-5 का शुभारम्भ

भारतीय कुमावत क्षत्रिय जिला महासभा उदयपुर द्वारा 20-22 मई, 2022 तक चलने वाले KPL सेशन-5 प्रतियोगिता का शुभारम्भ रेलवे ग्राउण्ड, ठोकर चौराहा, उदयपुर पर मुख्य अतिथि श्री गोपालदास जलांधरा, श्री कृष्णकान्त वनावड़िया तथा जिलाध्यक्ष युवराज सिंह नाहर एवं वरिष्ठ उपाध्यक्ष चन्द्रशेखर झांखरवाल द्वारा किया गया। टीम ऑनर रॉयल शिक्षण संस्थान की ओर से श्री वी.एल. मण्डावरा व श्री भरत अडाणिया को उपरणा ओढ़ाकर स्वागत किया गया। दोनों टीमों का परिचय कराकर मुख्य अतिथियों ने बैटिंग व बॉलिंग कर टूर्नामेंट का शुभारम्भ किया।

सिंघाना, झुंझुनू के ओमप्रकाश कुमावत के 2 बेटों ने समाज का नाम रोशन किया

सिंघाना, झुंझुनूं के श्री ओप्रपकाश कुमावत के दो बेटों 1. देवीलाल भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) अत्यधिक प्रतिभाशाली प्रतिष्ठित संगठन में अंतरिक्ष वैज्ञानिक के रूप में चयनित तथा 2. रजनीश CHC बडाउ, खेतड़ी में चिकित्सा अधिकारी के पद पर चयनित हुए।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से दोनों भाइयों को हार्दिक बधाई।

ज्ञानचंद जालन्दरा का IES में चयन

ज्ञानचंद जालन्दरा का इंडियन इंजीनियरिंग सर्विस (IES) में चयन होने पर कुमावत इंडिया पत्रिका की ओर से बधाई एवं शुभकामनाएं।

अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

स्व. 4 मई, 2022
श्री रामलाल माचिवाल
(मेड़ता सिटी वाले)
विकास नगर, धाभास, जयपुर

स्व. 4 मई, 2022
श्री रामजीलाल शर्मा
प्लाट नं. 1, जगदम्बा कॉलोनी
आगरा रोड, जयपुर

स्व. 13 मई, 2022
श्रीमती विद्या देवी
पत्नी स्व. श्री ग्यारसी लाल सिरस्वा
मुम्बई-पचार (सीकर)

स्व. 21 अप्रेल, 2022
श्री चन्द्र प्रकाश अजमेरा
मालवीय नगर, जयपुर

विज्ञापन

सौजन्य : कुमावत (खड़गटा-धुंधारिया) जनमंगल सेवा ट्रस्ट

हेमचन्द खड़गटा
अध्यक्ष

चेतन धुंधारिया
उपाध्यक्ष

लालचन्द धुंधारिया
कोषाध्यक्ष

कस्तूरमल कुमावत
सचिव

श्रद्धांजलि

विज्ञापन

स्व. 13.6.1961
मेरे प्रिय शुभचिन्तक व हितेषी
स्व. श्री रामदयाल खोरानिया (दिव्य पुरुष)
62वीं पुण्यतिथि 13 जून, 2022
पर सादर श्रद्धांजलि
मैं आपको सारी जिन्दगी धन्यवाद देता रहूँ
फिर भी आपका ऋण कभी नहीं चुका पाऊँगा।

श्रृद्धान्वतः
लाला
खोरानियों का चौक, बाबा हरिशचंद्र मार्ग,
चांदपोल बाजार जयपुर।

श्रद्धांजलि

स्वर्गवास 26.5.2002

स्व. श्री आनंदीलाल जी लखेसरा

की 20वीं पुण्य तिथि पर सादर श्रद्धांजलि

श्रद्धान्वत

पत्नी : श्रीमती सरन देवी,
पुत्र-पुत्रवधु : नारायण प्रकाश-बसंत
पुत्री-दामाद : विमला-प्रेमचंद जी
पौत्र-पौत्रवधु : मधुर वर्मा-शिवानी,
पौत्री-पौत्री दामाद : रितु-सुरेश जी, कविता-नरेश जी
कुसुम-निशांत जी

एफ-24, 4th एवेन्यू, लाल बहादुर नगर प.,
जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर मो. 9414238619

श्रद्धांजलि

स्व.श्रीमती दुर्गा देवी

धर्मपत्नी स्व. श्री अर्जुन किशोर जी

20वीं पुण्य तिथि

27 जून, 2022

स्व.श्री अर्जुन किशोर जी

(खण्डारिया)
(समाजसेवी एवं भामाशाह)
कुमावत विद्यालय के संस्थापक पदाधिकारी

12वीं पुण्य तिथि

30 मई, 2022

पर सादर श्रद्धांजलि

श्रृद्धान्वत:

पुत्र-पुत्रवधु : प्रकाशचन्द-शोभा, कन्हैयालाल-कल्पना ,
पौत्र-पौत्रवधु : आशीष-ज्योति
तपेश-प्रियंका, पौत्र : सोमवेन्द,
पौत्री-पौत्री दामाद: दिव्या (रोमिना)- भास्कर भौरोंदिया,
पूजा-विकास गठेलवाल, पड़पौत्री : नव्या, प्रणवी,
पड़दोहिते : महिरूद्र

प्रतिष्ठान : **मै. अर्जुन गारमेंट्स** सोडाला, जयपुर मो. 9828088040 | **मै. दुर्गा साड़ी एवं सलवार सूट** सोडाला, जयपुर मो. 9314058244

निवास - 52, लालपुरा कॉलोनी, वनस्थली मार्ग, जयपुर

श्रद्धांजलि

स्व.13.06.1961

स्व.श्री रामदयाल खोरानियां

62वीं पुण्यतिथि 13 जून 2022

हम सब परिजन अश्रुपुरित श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं

श्रृद्धान्वत:

धर्मपत्नी: ललिता देवी वर्मा (Retd. P.T.I),
भ्राता: दामोदर लाल खोरानियाँ
पुत्री-दामाद : माया- प्रकाश चन्द मारोठिया
विजय लक्ष्मी नागा (एडवोकेट)- ब्रजेश कुमार नागा (एडवोकेट)
दोहिते : लोमेश नागा (एडवोकेट) लक्ष्य

पता : खोरानियों का चौक, बाबा हरीश चन्द मार्ग
चांदपोल बाजार, जयपुर

श्रद्धांजलि

स्व. 22 मई 2018

स्व. श्री कैलाश जी बालोदिया

वाणिज्य कर विभाग, रिटायर्ड

की चतुर्थ पुण्य तिथि पर सादर श्रद्धांजलि

श्रृद्धान्वत :

धर्मपत्नि : श्रीमती निर्मला देवी
पुत्र-पुत्रवधु : दीपक-सुनिता, चन्द्रप्रकाश-सीमा
मोहित-पूजा
पौत्र : सुयश, धावित, हर्ष
पौत्री : युविका

निवास : एच-48, स्वेज फार्म, गोविन्दपुरी, रामनगर, सोडाला, जयपुर

आभार

परम प्रिय स्व. श्री चन्द्र प्रकाश अजमेरा पुत्र स्व. श्री गणेश लाल अजमेरा का 21 अप्रेल, 2022 को आकस्मिक निधन पर सजल नयनों से श्रृद्धांजली अर्पित करते हैं। आपका मधुर व्यवहार, जन सेवा भावना तथा परोपकारिता के भाव सदैव हम सभी के पथ प्रदर्शक रहेंगे।

(20 जून 1948-21 अप्रेल 2022)

श्री चन्द्र प्रकाश अजमेरा

(पुत्र स्व. श्री गणेश लाल जी अजमेरा)

अपूर्णीय क्षति की इस दुःखद घड़ी में आप सभी के द्वारा दी गयी भावनात्मक सान्त्वना एवं सहयोग के लिए हम हृदय से आपका आभार व्यक्त करते हैं।

आभारकर्ता

लक्ष्यराज (सरस डेयरी)-राजेश (भ्राता-भ्रातावधु), सुरेश कुमार (भ्राता), श्रीमती शशिप्रभा (बहिन), गौरव (स्काउट-गाइड)-मीनू (पुत्र - पुत्रवधु), अनिल, विनोद, भरत, प्रशांत, ललित (भतीजे), किशिका, किंजल (पौत्री) एवं अजमेरा परिवार।

ससुराल पक्ष : श्रीमती शान्ती देवी (सास), श्री लक्ष्मण सिंह - श्रीमती अशलेखा, श्री राजेन्द्र सिंह - श्रीमती रेखा (साले-सालेवधु) श्रीमती शकुन-श्री राजेन्द्र खोवाल (साली - साडु)

पुत्री ससुराल पक्ष : श्रीमती मैना देवी-श्री मिश्रीलाल बालोदिया (समधन-समधी), उर्वशी-श्री राजेन्द्र जी (पुत्री- दामाद), आकाश (दोहिता)

पुत्र ससुराल पक्ष : श्रीमती रामजानकी-श्री सत्यनारायण नागा (समधन-समधी)

मित्रगण : सोहन लाल अजमेरा, गोपाल लाल अजमेरा, सुरेन्द्र कुमार नागा, गोविन्द सिंह खोवाल, लक्ष्मीनारायण घोडीवाल, रमेश चन्द गैदर, आदि।

डी-219, मालवीय नगर, जयपुर-302017 मो. : 9829488824

Shubh Laxmi Crane & Engineers

(Formally Know as Shri Laxmi Crane Service)

All India Equipments Rental Service Provider

Jai Kishan Kumawat
+91- 9829125428
+91- 9887011175

Shankar Lal Kumawat
+91- 9887227775

Mukesh Kumar Kumawat
+91- 9887337775

H.O.
Shree Heera Bhawan, Dholi Mandi
Chomu-303702 Distt. Jaipur (Rajasthan)

B.O.
Near Patwar Bhawan,Village - Kawas
Distt. Barmer - 344035 (Rajasthan)

shreelaxmicranes@gmail.com
shubhlaxmicrane@gmail.com

www : shrilaxmicrane.com

Graphic By : Art point # 9928064300

RNI - RAJHIN/2017/74285

i"kd% dekor bfM;k i=f=dk
,Q 31@,] ,l- ,y-ekx]
yky cgknj uxj&i-] nxkZiqjk] t;iqj & 302018